

सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय



शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली २०६९ (संशोधनसहित)

विषय सूची

| | |
|--|-----------|
| परिच्छेद १ : प्रारम्भिक : | १ |
| १. सङ्क्षिप्त नाम र प्रारम्भ : | १ |
| २. परिभाषा : | १ |
| परिच्छेद २ : शिक्षक, कर्मचारीको दरबन्दीको सिर्जना र पदको वर्गीकरण : | ३ |
| ३. दरबन्दीको सिर्जना : | ३ |
| ४. पद तथा श्रेणीहरूको वर्गीकरण : | ३ |
| ५. पदपूर्ति : | ४ |
| ६. उम्मेदवारको लागि आवश्यक न्यूनतम योग्यता : | ५ |
| ७. नियुक्ति : | ५ |
| ८. परीक्षण काल : | ६ |
| ९. करार सेवामा नियुक्ति : | ६ |
| १०. आगन्तुक शिक्षकको ब्यवस्था : | ६ |
| ११. पदावधिको गणना : | ७ |
| १२. कायम मुकायम : | ७ |
| १३. निमित्त : | ८ |
| १४. पदाधिकार : | ८ |
| परिच्छेद ३ : सेवा सुरक्षा : | ८ |
| १५. सेवा सुरक्षा : | ८ |
| १६. सेवासर्तको सुरक्षा : | ८ |
| परिच्छेद ४ : सरुवा : | ८ |
| १७. सरुवा : | ८ |
| १८. सरुवा गर्ने अधिकारी : | ८ |
| १९. काज : | ८ |
| २०. काज खटाउने अधिकार | ११ |
| परिच्छेद ५ : हाजिरी र बिदा : | ११ |
| २१. हाजिरी : | ११ |
| २२. हाजिरीको अभिलेख : | ११ |
| २३. बिदाका प्रकार : | ११ |
| २४. घर बिदा : | ११ |
| २५. बिरामी बिदा : | ११ |
| २६. प्रसूति र प्रसूति सेवा बिदा : | ११ |
| २७. पर्व बिदा : | ११ |
| २८. भइपरी आउने बिदा : | ११ |
| २९. किरिया बिदा : | ११ |
| ३०. अध्ययन बिदा : | ११ |
| ३१. स्वाध्ययन बिदा : | ११ |
| ३२. असाधारण बिदा : | १५६ |
| ३३. विशेष तलबी बिदा : | १५६ |
| ३४. बिदा सञ्चित : | १६६ |

| | |
|---|------------|
| ३५. विदा उपभोग : | १६७ |
| ३६. विदा अधिकार नहुने : | १६७ |
| ३७. विदा स्वीकृत गर्ने अधिकारी : | १६७ |
| परिच्छेद ६ : तलब, भत्ता, औषधि उपचार, चाडपर्व खर्च र सुविधाहरू : | १६८ |
| ३८. तलब भत्ता : | १६८ |
| ३९. तलब भुक्तानी : | १७८ |
| ४०. दैनिक तथा भ्रमण भत्ता : | १७८ |
| ४१. पारिवारिक दैनिक तथा भ्रमण भत्ता : | १७८ |
| ४२. निलम्बनको अवधिको तलब : | १७८ |
| ४३. चाडपर्व खर्च : | १९ |
| ४४. औषधि उपचार खर्च : | १९ |
| ४५. विश्वविद्यालय सेवा पदकको व्यवस्था : | २० |
| ४६. दाहसंस्कार खर्च : | २० |
| ४७. प्राथमिकता र सहूलियत : | २० |
| ४८. चेयर प्रदान : | २० |
| ४९. मरणोपरान्त अनुदान : | २० |
| परिच्छेद ७ : अवकाश | २१ |
| ५०. अनिवार्य अवकाश : | २१ |
| ५१. स्वेच्छिक अवकाश : | २२ |
| ५२. सेवाअवधिको गणना : | २२ |
| परिच्छेद ८ : उपदान र निवृत्तिभरण : | २३ |
| ५३. उपदान र निवृत्तिभरण कोष : | २३ |
| ५४. उपदान : | २३ |
| ५४.क योगदानमा आधारित उपदानसम्बन्धी व्यवस्था : | २४ |
| ५५. निवृत्तिभरण : | २४ |
| ५६. निवृत्तिभरण वृद्धि : | २५ |
| ५७. पारिवारिक निवृत्तिभरण : | २५ |
| ५८. असाधारण पारिवारिक निवृत्तिभरण : | २६ |
| ५९. समिति गठन : | २६ |
| ६०. तलबको उल्लेख : | २७ |
| ६१. उपदान तथा निवृत्तिभरण पाउने हकवालाको क्रम र कार्यविधि : | २७ |
| ६२. उपदान वा निवृत्तिभरण रोक्का : | २८ |
| ६३. उपदान वा निवृत्तिभरण पाउने : | २८ |
| परिच्छेद ९ : शिक्षक, कर्मचारीको सञ्चयकोष र सापटी : | २९ |
| ६४. कर्मचारी सञ्चयकोष : | २९ |
| ६५. सापटी तथा पेस्की : | २९ |
| परिच्छेद १० : शिक्षक, कर्मचारीको आचरण | २८० |
| ६६. विश्वविद्यालयका शिक्षक, कर्मचारीको आचरण : | २८० |
| परिच्छेद ११ : विभागीय कारबाही, सजाय र पुनरावेदनसम्बन्धी व्यवस्था : | ३०२ |
| ६७. सजाय : | ३०२ |
| ६८. नसिहत, ग्रेडवृद्धि वा बढुवा रोक्का : | ३०२ |

| | |
|--|------------|
| ६६. सेवाबाट हटाउने वा बरखास्त गर्ने : | ३०२ |
| ७०. विभागीय कारवाही र सजायसम्बन्धी विशेष न्यवस्था : | ३१३ |
| ७१. तलब कट्टी : | ३१३ |
| ७२. निलम्बन : | ३१४ |
| ७३. सजायसम्बन्धी कार्यविधि : | ३२४ |
| ७४. सेवा आयोगसँग परामर्श : | ३२४ |
| ७५. सजाय गर्ने अधिकारी : | ३२५ |
| ७६. पुनरावेदन : | ३३५ |
| ७७. सेवामा पुनः कायम र तलब भत्ता : | ३३५ |
| ७८. नोकरी थाम्न कर नलाग्ने : | ३३५ |
| परिच्छेद १२ : विश्वविद्यालय सेवा आयोगको काम, कर्तव्य र अधिकार : | ३३६ |
| ७९. विश्वविद्यालय सेवा आयोगको काम, कर्तव्य र अधिकार : | ३३६ |
| परिच्छेद १३ : विश्वविद्यालय सेवा आयोगको बैठक र निर्णय : | ३४७ |
| ८०. विश्वविद्यालय सेवा आयोगको बैठक र निर्णय : | ३४७ |
| परिच्छेद १४ : विश्वविद्यालय सेवाको परीक्षा सञ्चालन र पाठ्यक्रम निर्धारण : | ३४८ |
| ८१. विश्वविद्यालय सेवाको परीक्षा सञ्चालन : | ३४८ |
| ८२. शैक्षिक योग्यता र पाठ्यक्रम : | ३९ |
| परिच्छेद १५ : विश्वविद्यालय सेवा आयोगसँग परामर्शसम्बन्धी कार्यविधि : | ३६० |
| ८३. विश्वविद्यालय सेवासँग परामर्श लिँदा अपनाउनुपर्ने कार्यविधि : | ३६० |
| ८४. विश्वविद्यालय सेवा आयोगले परामर्श दिँदाको अपनाउने कार्यविधि : | ४० |
| परिच्छेद १६ : निरीक्षण : | ३७१ |
| ८५. निरीक्षण : | ३७१ |
| ८६. पुनरावलोकन : | ३७१ |
| परिच्छेद १७ : अधिकार प्रत्यायोजन : | ३७२ |
| ८७. अधिकार प्रत्यायोजन : | ३७२ |
| ८८. उजुरी : | ३८२ |
| ८९. सेवा आयोगको कार्यालय : | ३८३ |
| ९०. आचारसंहिता : | ३८३ |
| ९१. कार्यविधि निर्धारण : | ३९३ |
| ९२. गोप्यता : | ३९३ |
| ९३. विशेष न्यवस्था : | ३९३ |
| परिच्छेद १८ : पुनरावेदन आयोग : | ३९४ |
| ९४. आयोगको गठन : | ३९४ |
| ९५. आयोगको अधिकार र अधिकारको प्रयोग : | ४० |
| ९६. आयोगको अधिकार क्षेत्र : | ४०५ |
| ९७. आयोगको कार्यविधि : | ४१५ |
| ९८. प्रतिरक्षा : | ४१५ |
| ९९. आयोगका अध्यक्ष तथा सदस्यहरूको पदावधि तथा अन्य सेवासर्तसम्बन्धी सुविधाहरू : | ४१५ |
| १००. आयोगलाई आवश्यक कर्मचारी तथा अन्य न्यवस्था : | ४१६ |
| १०१. निर्णयको कार्यान्वयन : | ४१६ |
| १०२. नक्कल : | ४१६ |

| | |
|--|-----------|
| परिच्छेद १६ : विविध : | ४१ |
| १०३. पूर्वसूचना : | ४१ |
| १०४. सुविधा दिने : | ४१ |
| १०५. निरोगिताको प्रमाणपत्र : | ४२ |
| १०६. काम गर्ने समय : | ४२७ |
| १०७. सेवा विवरण : | ४२ |
| १०८. बुझ्बुझ्कारथ | ४८ |
| १०९. राजीनामासम्बन्धी न्यवस्था : | ४३ |
| ११०. समायोजन : | ४३ |
| ११०क. समायोजनसम्बन्धी विशेष न्यवस्था : | ४३ |
| ११०ख. समायोजनबारे थप विशेष न्यवस्था : | ४३५० |
| १११. कार्यन्यवस्थापन प्रणाली : | ४५१ |

सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली, २०६९

सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय ऐन, २०६७ का दफा ३१ र ४३ ले दिएको अधिकार प्रयोग गरी सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय सभाले देहायका नियमहरू बनाएको छ :

परिच्छेद १

प्रारम्भिक

१. **सङ्क्षिप्त नाम र प्रारम्भ** : (१) यस नियमको नाम *सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली २०६९*, रहेको छ ।
- (२) यो नियमावली तुरुन्त प्रारम्भ हुनेछ ।
२. **परिभाषा** : (१) विषय वा प्रसङ्गले अर्को अर्थ लागेमा बाहेक यस नियममा :
- (क) 'ऐन' भन्नाले सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय ऐन, २०६७ सम्मनुपर्दछ ।
 - (ख) 'नियम' भन्नाले सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली २०६९ सम्मनुपर्दछ ।
 - (ग) 'विश्वविद्यालय' भन्नाले सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय सम्मनुपर्दछ ।
 - (घ) 'सभा' भन्नाले ऐनको दफा ७ बमोजिमको विश्वविद्यालयको सभा सम्मनुपर्दछ ।
 - (ङ) 'कार्यकारी परिषद्' भन्नाले ऐनको दफा १२ बमोजिमको कार्यकारी परिषद् सम्मनुपर्दछ ।
 - (च) 'सेवा आयोग' भन्नाले ऐनको दफा २१ बमोजिम गठित सेवा आयोग सम्मनुपर्दछ ।
 - (छ) 'पुनरावेदन आयोग' भन्नाले यसै नियमको परिच्छेद १८ बमोजिम गठन भएको पुनरावेदन आयोग सम्मनुपर्दछ ।
 - ♥(ज) 'अध्यक्ष' भन्नाले यस नियमावलीअन्तर्गत अध्यक्ष भनी उल्लेख भएका सबै अध्यक्षहरूलाई जनाउनेछ । सो शब्दले बैठकको अध्यक्षता गर्ने उपाध्यक्ष वा सदस्य समेतलाई जनाउनेछ ।
 - ♥(झ) 'सदस्य' भन्नाले यस नियमावलीअन्तर्गत सदस्य भनी उल्लेख भएका सबै सदस्यहरूलाई जनाउनेछ । सो शब्दले पदेन सदस्य र बैठकमा आमन्त्रित व्यक्तिलाई समेत जनाउनेछ ।
 - (ञ) 'सङ्काय' भन्नाले विश्वविद्यालयको सङ्कायलाई सम्मनुपर्दछ ।
 - * (ट) 'विभाग' भन्नाले विश्वविद्यालयको डीन कार्यालयअन्तर्गतका विभाग सम्मनुपर्दछ ।
 - (ठ) 'निकाय' भन्नाले विश्वविद्यालयमा रहेको वा सोअन्तर्गतको कुनै पनि निकाय वा कार्यालय सम्मनुपर्दछ ।
 - (ड) 'पदाधिकारी' भन्नाले ऐनको दफा ६ र तोकिएबमोजिमका पदाधिकारीहरू सम्मनुपर्दछ ।
 - (ढ) 'उपकुलपति' भन्नाले विश्वविद्यालयको उपकुलपति सम्मनुपर्दछ ।
 - (ण) 'रजिष्ट्रार' भन्नाले विश्वविद्यालयको रजिष्ट्रार सम्मनुपर्दछ ।
 - (त) 'डीन' भन्नाले विश्वविद्यालयको सङ्काय, स्कुल र कलेजको डीन सम्मनुपर्दछ ।
 - ♥(थ) 'शिक्षक' भन्नाले विश्वविद्यालय ऐन २०६७, को दफा २ को उपदफा (थ) बमोजिम विश्वविद्यालयमा शिक्षा प्रदान गर्ने वा अनुसन्धान गर्ने गराउने प्राध्यापक (Professor), सहप्राध्यापक (Associate Professor), उपप्राध्यापक (Assistant Professor), सहायक प्राध्यापक (Assistant Lecturer) तथा शिक्षण सहायक (Teaching Assistant) सम्मनुपर्दछ र सो शब्दले विश्वविद्यालयका विभिन्न तहका प्रशिक्षक (Instructor) तथा यस नियमावलीमा शिक्षक भनी तोकिएको व्यक्तिलाई सम्मनुपर्दछ ।

* (शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली (पहिलो संशोधन) २०७० द्वारा संशोधित

♥ शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली (सातौं संशोधन) २०७८ द्वारा संशोधित

- (द) 'कर्मचारी' भन्नाले विश्वविद्यालयको बहालवाला कर्मचारी सम्भन्तुपर्दछ ।
- (ध) 'प्रमुख' भन्नाले शिक्षक वा कर्मचारीका पदाधिकारमा वा कार्यरत रहेको निकाय वा कार्यालयको प्रमुख सम्भन्तुपर्दछ ।
- (न) 'विश्वविद्यालय सेवा' भन्नाले विश्वविद्यालयका शिक्षक तथा अन्य कर्मचारीको सेवा सम्भन्तुपर्दछ ।
- (प) 'अख्तियारवाला' भन्नाले तोकिएको अख्तियारवाला सम्भन्तुपर्दछ ।
- (फ) 'उपदान वा निवृत्तिभरण कोष' भन्नाले विश्वविद्यालयको आर्थिक प्रशासन नियमावलीबमोजिम स्थापना गरिएको विश्वविद्यालयको उपदान तथा निवृत्तिभरण कोष सम्भन्तुपर्दछ ।
- (व) 'तोकिएको वा तोकिएबमोजिम' भन्नाले यस नियम र यस नियमअन्तर्गतका कार्यविधि र कार्य व्यवस्थापन प्रणालीबमोजिम तोकिएको वा तोकिएबमोजिम सम्भन्तुपर्दछ ।
- (२) *नियमावलीको व्याख्या* : यस नियमावलीको व्याख्या गर्ने अधिकार कार्यकारी परिषद्लाई हुनेछ ।
- (३) *बाधा अडकाउ फुकाउने* : यो नियमावलीको कार्यान्वयन गर्दा वा विश्वविद्यालयको कार्य सम्पादन गर्दा कुनै किसिमको बाधा अडकाउ आएमा सो बाधा अडकाउ फुकाउने अधिकार कार्यकारी परिषद्लाई हुनेछ । यो नियमावली कार्यान्वयन गर्न कुनै विशेष व्यवस्था गर्नुपर्ने भएमा कार्यकारी परिषद्ले निर्णय गरी सो व्यवस्था गर्न सक्नेछ । यसरी गरिएको *व्यवस्थासम्बन्धी निर्णय लगत्तै बस्ने सभाबाट अनुमोदन गराउनुपर्नेछ ।
- (४) *कार्यविधि वा कार्य व्यवस्थापन प्रणाली बनाउने अधिकार* : यस नियमावलीको कार्यान्वयन गर्न र उद्देश्य प्राप्तिका लागि कार्यविधि र कार्य व्यवस्थापन प्रणाली बनाई कार्यकारी परिषद्ले लागु गर्न सक्नेछ ।
- (५) *काम कारवाही वैध हुने* : यो नियमावली लागु हुनुभन्दा अगाडि कार्यकारी परिषद् वा उपकुलपति वा रजिष्ट्रार वा अन्य पदाधिकारीले गरेगरेको शिक्षक कर्मचारी सेवासम्बन्धी काम कारवाही यसै नियमबमोजिम भएगरेको मानिनेछ ।
- (६) *बचाउ* : विश्वविद्यालय ऐन नियमबमोजिम विश्वविद्यालयका पदाधिकारी, शिक्षक वा कर्मचारीले असल नियतले गरेका कुनै काम कारवाहीका सम्बन्धमा निजहरूउपर मुद्दा चलाइने वा अन्य कुनै कानुनी कारवाही गरिने छैन ।
- (७) *ऐनको मनसायबमोजिम व्याख्या गर्नुपर्ने* : विश्वविद्यालय ऐनमा प्रयुक्त शब्द र वाक्यांशहरू यस नियमावलीमा प्रयोग भएकोमा प्रसङ्गवश अर्को अर्थ लागेमा ती वाक्यांश र शब्दहरूको व्याख्या ऐनकै प्रसङ्गानुरूप गरिनेछ ।

* शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली (पहिलो संशोधन) २०७० द्वारा संशोधित

परिच्छेद २

शिक्षक, कर्मचारीको दरबन्दीको सिर्जना र पदको वर्गीकरण

३. दरबन्दीको सिर्जना : विश्वविद्यालयमा शिक्षक तथा कर्मचारीहरूको दरबन्दी कार्यकारी परिषद्ले तोकेबमोजिम रहनेछ ।

♥४. पद तथा श्रेणीहरूको वर्गीकरण : (१) विश्वविद्यालयमा देहायका पद तथा श्रेणीहरू रहनेछन् :

(क) सेवा : शिक्षण

| पद | श्रेणी |
|---|---------|
| १. प्राध्यापक (Professor) | विशिष्ट |
| २. सहप्राध्यापक (Associate Professor) | प्रथम |
| ३. उपप्राध्यापक (Assistant Professor) | द्वितीय |
| ४. सहायक प्राध्यापक (Assitant Lecturer) | तृतीय |
| ५. शिक्षण सहायक (Teaching Assistant) | तृतीय |
| ६. प्रशिक्षक (Instructor) | तृतीय |

(ख) सेवा : प्रशासन

| अधिकृत स्तर | श्रेणी |
|----------------------------|---------------|
| १. प्रशासक वा सो सरह | विशिष्ट |
| २. सहप्रशासक वा सो सरह | प्रथम |
| २. उपप्रशासक वा सो सरह | द्वितीय |
| ३. सहायक प्रशासक वा सो सरह | तृतीय |
| सहायक स्तर | |
| १. हेड असिस्टेन्ट | प्रथम |
| २. असिस्टेन्ट | द्वितीय |
| ३. सपोर्ट स्टाफ | (श्रेणीविहीन) |

♥(२) सहायक प्राध्यापक र शिक्षण सहायक तहको पदमा करार सेवामा मात्र नियुक्ति हुनेछ । सो पदहरूको सेवासम्बन्धी अन्य व्यवस्था करारमा उल्लेख भएबमोजिम हुनेछ ।

(३) उपनियम (१) को खण्ड (ग) मा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि कार्यकारी परिषद्ले आवश्यकताअनुसार सहायक स्तरका कर्मचारीहरूको वर्गीकरण गर्न सक्नेछ ।

(४) उपनियम (१), (२) र (३) मा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि विश्वविद्यालय सेवामा कार्यकारी परिषद्ले तोकिएबमोजिमका विभिन्न समूह तथा उपसमूहहरू रहन सक्नेछन् ।

(५) शिक्षाको क्षेत्रमा उल्लेखनीय काम गरेको आधारमा सभाको स्वीकृतिमा वर्तमान र भूतपूर्व शिक्षकहरूलाई कुलपतिबाट विशिष्ट प्राध्यापक *(Professor Emeritus) पदमा नियुक्ति गर्न सक्नेछ ।

(६) उपनियम (५) बमोजिम नियुक्त विशिष्ट प्राध्यापकको तलब, सुविधा, अवधि अन्य सेवासर्त कार्यकारी परिषद्ले तोकेबमोजिम हुनेछ ।

५. पदपूर्ति : (१) विश्वविद्यालय सेवामा रिक्त रहेका वा सिर्जना गरिएका पदहरूमध्ये आन्तरिक वा खुला प्रतियोगिताद्वारा तोकिएको आधारमा पदपूर्ति गर्न सकिनेछ ।

(२) सेवामा रिक्त रहेका पदहरूमध्ये आन्तरिक वा खुला प्रतियोगिताद्वारा शिक्षक तथा कर्मचारीको शैक्षिक योग्यता, कार्यक्षमता, ज्येष्ठता र कार्यसम्पादनसमेतको मूल्याङ्कनबाट बहुवाद्वारा पूर्ति गरिने पदहरूको प्रतिशत कार्यकारी परिषद्ले तोकेबमोजिम हुनेछ ।

(३) उपनियम (१) मा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि विश्वविद्यालय सेवालार्ई समावेशी बनाउन सेवा प्रवेशको खुला प्रतियोगिताद्वारा पूर्ति हुने पदहरूमध्ये ४५ प्रतिशत पद छुट्याई सो प्रतिशतलाई शतप्रतिशत मानी देहायबमोजिमका उम्मेदवारहरूविचमा मात्र छुट्याछुट्टै प्रतिस्पर्धा गराई पदपूर्ति गरिनेछ :

क) महिला - ३३ (तेत्तिस) प्रतिशत,

ख) आदिवासी/जनजाति - २७ (सत्ताइस) प्रतिशत,

ग) मधेसी - २२ (बाइस) प्रतिशत,

घ) दलित - ९ (नौ) प्रतिशत,

ङ) अपा० - ५ (पाँच) प्रतिशत,

च) पिछडिएको क्षेत्र - ४ (चार) प्रतिशत ।

१) यस उपनियमको प्रयोजनका लागि पिछडिएको क्षेत्र भन्नाले अछाम, कालिकोट, जाजरकोट, जुम्ला, डोल्पा, बझाङ, बाजुरा, मुगु र हुम्ला जिल्ला सम्भन्नुपर्दछ ।

२) यस उपनियमको खण्ड (क), (ख), (ग) र (घ) को प्रयोजनको लागि “महिला, आदिवासी/जनजाति, मधेसी र दलित” भन्नाले आर्थिक सामाजिक रूपमा पछाडि परेका “महिला, आदिवासी/जनजाति, मधेसी र दलित सम्भन्नुपर्दछ ।”

(४) यस नियममा अन्यत्र जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि उपनियम (३) को खण्ड (ङ) बमोजिम निर्धारित प्रतिशतको पदको कुनै खास प्रकृतिको तोकिएबमोजिमका विभिन्न किसिमका अपा०हरूविच मात्र प्रतिस्पर्धा गर्न पाउने गरी प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाद्वारा पूर्ति गरिनेछ ।

(५) उपनियम (३) बमोजिम प्रतिशत निर्धारण गर्दा एक प्रतिशतभन्दा कम घाताङ्क (फ्याक्सन) आएमा त्यस्तो घाताङ्क जुन समूहको घाताङ्क आएको हो सोभन्दा लगत्तैपछिको समूहमा सडै जानेछ ।

* शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली (पहिलो संशोधन) २०७० द्वारा अंग्रेजी थप गरिएको

(६) उपनियम (३) बमोजिम छुट्ट्याइएको पदमा जुन वर्षका लागि विज्ञापन भएको हो सो वर्ष हुने विज्ञापनमा उपयुक्त उम्मेदवार हुन नसकेमा त्यस्तो पद खुला प्रतिस्पर्धाबाट पूर्ति हुने पदमा समावेश गर्नुपर्नेछ ।

(७) उपनियम (३) द्वारा पदपूर्ति गर्ने व्यवस्था प्रत्येक दश वर्षमा पुनरावलोकन गर्नुपर्नेछ ।

♥ ६. उम्मेदवारको लागि आवश्यक न्यूनतम योग्यता : (१) विश्वविद्यालय सेवाको पदमा नियुक्ति र बढुवाका निमित्त उम्मेदवार हुन चाहिने आवश्यक न्यूनतम योग्यता तोकिएबमोजिम हुनेछ ।

♥(२) विश्वविद्यालय सेवाको पदमा शिक्षक तथा कर्मचारीको नियुक्ति र बढुवाका लागि सिफारिस गर्ने आधार र कार्यसम्पादन मुल्याङ्कन तोकिएबमोजिम हुनेछ ।

(३) उपनियम (२) बमोजिम नियुक्ति र बढुवाको आधार कार्यक्षमताको अङ्कको विभाजन तोकिएबमोजिम हुनेछ ।

♥ ४ देखि ८ खारेज

(९) उम्मेदवारको लागि अयोग्यता : विश्वविद्यालयको सेवाको पदमा देहायका व्यक्तिहरू उम्मेदवार हुन सक्ने छैनन् :

(क) अधिकृत स्तरभन्दा मुनिको पदमा १८ वर्ष उमेर पूरा नभएको,

(ख) शिक्षण र अधिकृत स्तरका कर्मचारीतर्फ २१ वर्ष उमेर पूरा नभएको ।

♥(ग) ३५ वर्ष उमेर पूरा भइसकेका तर महिला र प्राविधिक कर्मचारीको हकमा ४० वर्ष र शिक्षकको हकमा ४५ वर्ष पूरा गरेको । तर यो नियम लागु हुँदाका बखत विश्वविद्यालयमा अस्थायी वा पूर्णकालीन करार सेवामा कार्यरत शिक्षक कर्मचारीहरूलाई उमेर हद लाग्ने छैन ।

(घ) शिक्षणतर्फ प्राध्यापक र सहप्राध्यापकको खुला प्रतियोगितामा ५० वर्ष नाघेका विश्वविद्यालय सेवा बाहिरका व्यक्तिहरू उम्मेदवार हुन सक्ने छैनन् ।

(ङ) विश्वविद्यालय सेवा अथवा सरकारी सेवाका निमित्त अयोग्य ठहरिने गरी सेवाबाट बरखास्त गरिएका ।

(च) गैरनेपाली नागरिक ।

(छ) यस उपनियममा अन्यत्र जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय ऐन २०६७, को दफा ३ (२) बमोजिम यस विश्वविद्यालयमा समायोजन हुने त्रिविका आर्कि र सम्बन्धन प्राप्त क्याम्पसका शिक्षक, कर्मचारीको हकमा भने पहिलो पटकको लागि उमेरको हद लाग्ने छैन ।

७. नियुक्ति : (१) शिक्षक तथा कर्मचारीहरूलाई सेवा आयोगको सिफारिसमा विश्वविद्यालय सेवामा कार्यकारी परिषद्द्वारा नियुक्ति र बढुवा गरिनेछ ।

♥(२) उपनियम (१) बमोजिम सेवा आयोगबाट सिफारिस भएका व्यक्तिलाई कार्यकारी परिषद्को निर्णयानुसार रजिष्ट्रारले नियुक्ति गर्नेछ ।

♥ शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली (सातौं संशोधन) २०७८ द्वारा संशोधित

- (३) विश्वविद्यालय सेवामा नियुक्ति वा बहुवा पाएका शिक्षक तथा कर्मचारीलाई नतिजा प्रकाशन भई उजुरीको म्याद सकिएको वा उजुरीको अन्तिम किनारा लागेको मितिले १५ दिनभित्र नियुक्ति वा बहुवापत्र दिइनेछ।
- (४) सम्बन्धित शिक्षक कर्मचारीको नाममा नियुक्ति वा बहुवापत्र जारी भएको मितिले १५ दिनभित्र नियुक्ति वा बहुवा पाउने व्यक्तिले सो नियुक्ति वा बहुवापत्र बुझिसक्नुपर्नेछ।
- (५) उपनियम (४) बमोजिम पत्र बुझेको मितिले ३० दिनभित्र तोकिएको स्थान वा कार्यालयमा हाजिर भइसक्नुपर्नेछ।
- (६) उपनियम (५) बमोजिम म्यादभित्र हाजिर नभएमा सो नियुक्ति वा बहुवा स्वतः रद्द हुनेछ।
- (७) उपनियम (६) मा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि विश्वविद्यालयको स्थायी सेवामा भएका शिक्षक वा कर्मचारीहरू अध्ययन विदा, काज वा अन्य विदामा बसेको अवस्थामा यो नियम लागु हुने छैन।

८. परीक्षणकाल : (१) विश्वविद्यालय सेवाका पदहरूमा स्थायी नियुक्त भएका शिक्षक, कर्मचारी एक वर्षको परीक्षण कालमा रहनेछन्।

- (२) परीक्षण कालको कार्य सम्पादन सन्तोषजनक नभएमा सो नियुक्ति रद्द गरिनेछ।
- (३) उपनियम (२) बमोजिम नियुक्ति रद्द भएको अवस्थामा बाहेक एक वर्षको परीक्षणकाल पूरा गरेका शिक्षक वा कर्मचारीलाई स्थायी नियुक्तिको आधिकारिकता पत्र दिइनेछ।

९. करार सेवामा नियुक्ति : (१) विश्वविद्यालय सेवाको पद रिक्त भएमा आवश्यकताअनुसार कार्यकारी परिषद्को अनुमतिमा तोकिएको अधिकारीबाट एकपटकमा एक वर्षका लागि करार सेवामा नियुक्त गर्न सक्नेछ। करार सेवामा नियुक्त गर्दा प्रतिस्पर्धाको आधारमा गर्नुपर्नेछ। करार सेवामा रहेका शिक्षक तथा कर्मचारीको सेवा, सर्त सुविधा करारमा उल्लेख भएबमोजिम हुनेछ। तर यो नियम लागु हुनुभन्दा अघि अस्थायी सेवामा कार्यरत शिक्षक कर्मचारीले पाउने सेवा, सर्त र सुविधा पाउन यो नियमले बाधा पुऱ्याएको मानिने छैन।

- ♥(२) उपनियम (१) बमोजिम करार सेवामा कार्यरत शिक्षक कर्मचारीहरूको पदमा स्थायी नियुक्तिका लागि सिफारिस भई नआएसम्म निजहरूलाई प्रत्येक वर्ष कार्यकारी परिषद्को अनुमति लिई करार सेवा थप गर्न सकिनेछ।

♥(३)र (४) खारेज

१०. आगन्तुक शिक्षकको व्यवस्था : (१) यस नियमावलीमा अन्यत्र जेसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि आवश्यकताअनुसार विश्वविद्यालयले विशेष दरबन्दी सिर्जना गरी विशेष योग्यता भएका ख्यातिप्राप्त अनुभवी र दक्ष शिक्षक, कर्मचारीलाई विशेष करार गरी काममा लगाउन सक्नेछ।

- (२) करारमा आउने व्यक्तिहरूलाई कार्यकारी परिषद्ले प्रचलित स्केलभन्दा बढी तलब तथा अन्य सुविधा दिई काममा लगाउन सक्नेछ।^अ

♥शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली (सातौँ संशोधन) २०७८ द्वारा संशोधित

(३) विश्वविद्यालय वा सरकारी वा अनुसन्धान केन्द्रहरूमा कार्यरत कुनै खास योग्यताप्राप्त गरेको व्यक्तिलाई विद्या परिषद्को सिफारिसमा आगन्तुक शिक्षकको रूपमा कार्यकारी परिषद्ले तोकेबमोजिमको सुविधा दिई काम गराउन सक्नेछ ।

(४) विद्या परिषद् र प्राज्ञिक परिषद्को सिफारिसमा शिक्षा र अनुसन्धान क्षेत्रमा महत्त्वपूर्ण योगदान दिएका दक्ष तथा अनुभवी, ख्यातिप्राप्त र विशिष्ट शिक्षकलाई कार्यकारी परिषद्ले अवैतनिक मानार्थ (अनरेरी) प्राध्यापक पद प्रदान गर्न सक्नेछ ।

११. पदावधिको गणना : यस नियमावलीको नियम ८ अनुसार स्थायी पदमा नियुक्ति पाई परीक्षण कालमा रहेका शिक्षक कर्मचारीको नियुक्ति सदर कायम भएमा सो परीक्षणकालको अवधिलाई प्रत्येक वर्षमा थप गरिने ग्रेडवृद्धि तथा अन्य प्रयोजनको लागि गणना गर्नुपर्नेछ ।

१२. कायम मुकायम : (१) विश्वविद्यालय सेवाको शाखा प्रमुख न्यूनतम तृतीय श्रेणीको अधिकृत हुनेछ ।

(२) उक्त पद कुनै कारणवश ३० दिनभन्दा बढी रिक्त भएमा सो रिक्त भएको शाखा प्रमुख पदमा सोभन्दा एक तहमुनिको पदमा कार्यरत कर्मचारीमध्येबाट कार्यकारी परिषद्ले रिक्त रहेको पदको काम सम्हाल्न कायम मुकायम मुकरर गर्न सक्नेछ ।

(३) उपनियम (१) र (२) बमोजिम कायम मुकायम भई काम गरेको पदको सुरु तलबको अङ्कमा तलब दिँदा निजले साविक पदबाट खाइपाइआएको तलबभन्दा घटी हुने देखिएमा खाइपाइआएको तलबमा नघट्ने गरी थप ग्रेड दिन सकिनेछ ।

(४) कायम मुकायम भई काम गरेकोमा सो कामको जवाफदेहिता काम गर्ने शिक्षक कर्मचारीले वहन गर्नुपर्नेछ ।

(५) पूरा वर्ष कायम मुकायम भई काम गर्ने शिक्षक/कर्मचारीले अन्य कर्मचारीले पाए सरह ग्रेड वृद्धि पाउनेछन् ।

१३. निमित्त : (१) विश्वविद्यालयको कुनै निकाय वा कार्यालयको प्रशासकीय अधिकार प्रयोग गर्ने मुख्य व्यक्ति वा विभागीय प्रमुख कुनै कारणले ३० दिनभन्दा कम अवधिका निमित्त अनुपस्थित भएमा निजको मातहतको तोकिएको पदाधिकारी, शिक्षक वा कर्मचारीले निमित्त भई दैनिक कार्य सञ्चालन गर्नेछ ।

(२) उपनियम (१) बमोजिम निमित्त भई काम गर्दा सो कामको जवाफदेहिता काम गर्ने शिक्षक, कर्मचारी वा पदाधिकारीउपर नै हुनेछ ।

(३) उपनियम (१) बमोजिम निमित्त भई काम गरेकोमा ७ दिनभन्दा कम अवधिका लागि कुनै प्रकारको भत्ता दिइने छैन तर ७ दिनभन्दा बढी काम गरेमा सुरुको तलब स्केलबमोजिम भत्ता दिइनेछ ।

१४. पदाधिकार : विश्वविद्यालयका शिक्षक वा कर्मचारीको राजीनामा स्वीकृत भएमा वा निज बरखास्त भएमा वा निजले अवकाश पाएमा वा बढुवा भएमा वा निज एक पदबाट अर्को पदमा सरुवा भएको अवस्थामा बाहेक देहायको अवस्थामा शिक्षक र कर्मचारीको आफ्नो पदमाथिको पदाधिकार कायम रहेको मानिनेछ :

(क) अर्को पदमा सरुवा भई कार्यभार सम्हाल्न पाइने म्यादसम्म,

- (ख) पदमा कामकाज गरी रहँदासम्म,
- (ग) निलम्बन रहेकोमा,
- (घ) बिदामा बसेकोमा,
- (ङ) काजमा खटाइएकोमा,
- (च) कायम मुकायम भई काम गरेकोमा ।

परिच्छेद ३

सेवा सुरक्षा

१५. सेवा सुरक्षा : विश्वविद्यालयका शिक्षक, कर्मचारीहरूलाई देहायको अवस्थामा बाहेक सफाइको उचित सबुत दिने मौका नदिए विश्वविद्यालय सेवाबाट हटाइने वा बरखास्त गरिने छैन :

- (क) नैतिक पतन देखिने फौजदारी अभियोगमा अदालतबाट कसुरदार ठहरिएमा,
- (ख) भागी बेपत्ता भएमा वा अन्य कुनै कारणले सम्पर्क हुन नसकेमा,
- (ग) म्यादी पदमा बहाल रहेकोमा,
- (घ) भ्रष्टाचारको आरोपमा अदालतबाट कसुरदार ठहरिएमा ।

१६. सेवासर्तको सुरक्षा : (१) शिक्षक वा कर्मचारीलाई नियुक्त हुँदा कायम रहेको तलब, उपदान, निवृत्तिभरणसम्बन्धी सर्तहरूमा निजलाई प्रतिकूल असर पर्ने गरी परिवर्तन गर्न पाइने छैन ।

- (२) शिक्षक वा कर्मचारी माथिल्लो पदमा बढुवा भएमा बढुवा भएको पदको सुरु स्केल साविक पदमा रही खाइपाइआएको तलब बराबर वा बढी भएमा मात्र बढुवा भएको माथिल्लो पदमा आवश्यक ग्रेड थप गरी तलब मिलान गरिनेछ ।
- (३) यस विश्वविद्यालयको ऐनबमोजिम त्रिविअन्तर्गतका आर्थिक र सम्बन्धन प्राप्त क्याम्पसका शिक्षक र कर्मचारी यस विश्वविद्यालयमा तोकिएबमोजिम समायोजन भई आउँदा निजहरूको स्थायी, अस्थायी र पूर्णकालीन करारमा काम गरेको अवधिलाई समेत गणना गरिनेछ ।
- (४) यस विश्वविद्यालयमा ऐनको दफा ३ (२) बमोजिम समावेश गरिएका त्रिविअन्तर्गतका आर्थिक तथा सम्बन्धन प्राप्त क्याम्पसका शिक्षक, कर्मचारी समायोजन भई यस विश्वविद्यालयमा आउँदा साविककै जो जुन पदमा बहाल रहेका हुन् सोही पदमा समायोजन हुनेछन् ।
- (५) उपनियम (४) बमोजिम समायोजन भई आएका शिक्षक, कर्मचारीहरूको तलब, भत्ता, सेवाका सर्तहरू र सुविधाहरू कम हुने गरी परिवर्तन गरिने छैन ।

परिच्छेद ४

सरुवा

१७. सरुवा : (१) शिक्षक वा कर्मचारीलाई आवश्यकताबमोजिम विश्वविद्यालयको एक निकायबाट अर्को निकायमा वा समान तहको अर्को पदमा सरुवा गर्न सकिनेछ ।

(२) उपनियम (१) बमोजिम सरुवा गर्दा सम्भव भएसम्म सरुवा हुने व्यक्तिसँग परामर्श गर्न सकिनेछ ।

(३) शिक्षक वा कर्मचारी एक निकायबाट अर्को निकायमा सरुवा हुँदा ३ दिनको तयारी म्याद दिनुपर्नेछ ।

♣ १८. सरुवा गर्ने अधिकारी : (१) देहायका शिक्षक तथा कर्मचारीहरूलाई देहायका अधिकारीले सरुवा गर्ने छः

♣ (क) नियम १७ बमोजिम शिक्षण सेवाको प्राध्यापक र सह-प्राध्यापक पदमा कार्यकारी परिषद्को निर्णय बमोजिम उपकुलपतिले र उपप्राध्यापक र शिक्षण सेवाका अन्य पदको सरुवा कार्यकारी परिषद्को निर्णय बमोजिम रजिष्ट्रारले गर्नेछ ।

♣ (ख) खारेज गरिएको छ ।

♣ (ग) कुनै कर्मचारीलाई कुनै संकाय, आंगिक क्याम्पस, केन्द्र वा विभाग र विश्वविद्यालयको कुनै संगठन वा निकाय मध्ये एक अर्को निकायमा सरुवा गर्नु पर्दा देहाय बमोजिमका अधिकारीले गर्न सक्नेछ,

♣ (अ) विशिष्ट श्रेणी वा सो सरहको अधिकृत कर्मचारीलाई कार्यकारी परिषद्को निर्णय बमोजिम उपकुलपतिले र अधिकृतस्तर प्रथम, द्वितीय र तृतीय श्रेणी वा सो सरहको कर्मचारीलाई रजिष्ट्रारले सरुवा गर्न सक्नेछ ।

♣ (आ) सहायक स्तरका कर्मचारीलाई सामान्य प्रशासन महाशाखा प्रमुखको सिफारिसमा रजिष्ट्रारले सरुवा गर्न सक्नेछ ।

♣ १९. काज : (१) विश्वविद्यालयका शिक्षक वा कर्मचारीलाई आवश्यकता अनुसार विश्वविद्यालयको एक निकायबाट अर्को निकायमा र विश्वविद्यालय बाहिरको सरकारी निकाय र अन्य कुनै विश्वविद्यालयमा तोकिएबमोजिम काजमा पठाउन सकिनेछ ।

(२) विश्वविद्यालयका शिक्षक वा कर्मचारीलाई विश्वविद्यालयबाहेकको कुनै सरकारी वा गैरसरकारी निकाय वा कार्यालयमा ३ (तीन) महिना वा सोभन्दा बढी काजमा पठाउनुपर्ने भएमा सो काज बेतलवी काज मानिनेछ ।

(३) विश्वविद्यालय सेवा अवधिभरमा बेतलवी काजमा पठाउने अवधिको सीमा कार्यकारी परिषद्ले निर्धारण गरेबमोजिम हुनेछ ।

(४) उपनियम (२) र (३) बमोजिम बेतलवी काजमा पठाउनुपरेमा नेपाल सरकारबाट नियुक्ति हुने पदमा बाहेक अन्य काजमा गएका शिक्षक वा कर्मचारीलाई काजमा लिने कार्यालयमा निर्धारित तलबको १० (दश) प्रतिशतमा नघट्ने गरी कार्यकारी परिषद्ले तोकेबमोजिम विश्वविद्यालय उपदान र निवृत्तिभरणसम्बन्धी कोषमा जम्मा गराउनुपर्नेछ ।

- (५) बेतलबी काजमा लिने विश्वविद्यालयबाहेकको निकाय वा कार्यालयलाई बेतलबी काजमा रहेको अवधिको निज वा कर्मचारीप्रति विश्वविद्यालयको नियमअनुसार बेहोर्नुपर्ने उपदान वा निवृत्तिभरण, बिरामी बिदा, घर बिदा र अन्य वित्तीय सुविधा वा सहूलियतको रकमको प्रयोजनका लागि काजमा लिने निकाय वा कार्यालयबाट जम्मा हुने रकम प्रयोग गर्नुपर्नेछ ।
- (६) विश्वविद्यालयबाट तलबी वा बेतलबी काजमा रहेको शिक्षक वा कर्मचारीले विश्वविद्यालयबाहेकको सरकारी वा गैरसरकारी निकाय वा कार्यालयबाट उपदान वा बिरामी बिदा वा स्वास्थ्योपचार वा यस नियमअन्तर्गत कुनै दातृसंस्थाबाट सुविधा उपभोग गरेको भएमा सोबाफतको रकम विश्वविद्यालयले निज शिक्षक वा कर्मचारी अवकाश हुँदाका बखत प्राप्त गर्ने रकमबाट कट्टी वा असुल गर्नुपर्नेछ ।

♥२०. **काज खटाउने अधिकार :** (१) विश्वविद्यालयबाहेकको सरकारी वा गैरसरकारी निकायमा विश्वविद्यालयका शिक्षक वा कर्मचारीलाई देहायको अख्तियारवालाले काजमा खटाउन सक्नेछ :

- (क) कुनै शिक्षक वा कर्मचारीलाई ३ महिना वा सोभन्दा बढी अवधिका लागि कार्यकारी परिषद्को निर्णयानुसार रजिष्ट्रारले,
- (ख) सहप्राध्यापक र प्राध्यापकलाई ३ महिनाभन्दा कम अवधिका लागि उपकुलपतिले,
- (ग) उपप्राध्यापक वा सोभन्दा मुनिका शिक्षक र सबै तहका कर्मचारीलाई ३ महिनाभन्दा कम अवधिका लागि सम्बन्धित निकायको प्रमुखको सिफारिसमा रजिष्ट्रारले,
- (घ) उपनियम १ (क) बमोजिम काजमा खटाउँदा ५ वर्षभन्दा बढीका लागि खटाइने छैन । यसरी काजमा खटिइजाने शिक्षक वा कर्मचारीले सो अवधिमा निजको तलबको १००० ले हुन आउने रकम विश्वविद्यालयको उपदान तथा निवृत्तिभरण कोषमा जम्मा गर्नुपर्नेछ ।
- (ङ) सेवाको अभिलेखको प्रयोजनको निमित्त केन्द्रीय कार्यालयमा बेतलबी काजमा खटाइएको विवरण सहितको जानकारी सम्बन्धित कार्यालयले अनिवार्य रूपमा दिनुपर्नेछ ।

परिच्छेद ५

हाजिरी र बिदा

२१. **हाजिरी :** यस नियमावलीमा अन्यथा व्यवस्था भएकोमा बाहेक विश्वविद्यालयका शिक्षक तथा कर्मचारीले तोकिएको समयमा विश्वविद्यालयको सम्बन्धित निकाय वा कार्यालयमा तोकिएबमोजिम रुजु हाजिर रहनुपर्नेछ ।
२२. **हाजिरीको अभिलेख :** विश्वविद्यालयको सेवामा कार्यरत शिक्षक, कर्मचारीको हाजिरीको अभिलेख कार्यकारी परिषद्ले तोकेबमोजिम राखिनेछ ।

♥ शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली (सातौं संशोधन) २०७८ द्वारा संशोधित

२३. बिदाका प्रकार : (१) विश्वविद्यालयका शिक्षक तथा कर्मचारीहरूलाई देहायका बिदाका प्रकारको सुविधा

दिन सकिनेछ :

- (क) घर बिदा,
- (ख) विरामी बिदा,
- (ग) प्रसूति बिदा र प्रसूति सेवा बिदा,
- (घ) पर्व बिदा,
- (ङ) भइपरी आउने बिदा,
- (च) किरिया बिदा,
- (छ) अध्ययन बिदा,
- (ज) स्वाध्ययन बिदा,
- (झ) असाधारण बिदा,
- (ञ) विशेष तलबी बिदा ।

२४. घर बिदा : (१) बर्से वा हिउँदे बिदा नपाउने शिक्षक वा कर्मचारीलाई वर्षको ३० (तिस) दिन घर बिदा दिन सकिनेछ ।

- (२) विश्वविद्यालयको शिक्षक, कर्मचारी घर बिदामा बस्नुभन्दा अगाडि अनिवार्य रूपमा बिदा स्वीकृत गराउनुपर्नेछ ।
- (३) शिक्षक र कर्मचारीले वर्षको एकपटक घर बिदामा जाँदा र फर्कदा उचित बाटोको म्याद पाउनेछन् ।
- (४) चाडपर्व, विरामी, भइपरी बिदा र किरिया बिदाबाहेक अन्य बिदामा बसेको समयमा घर बिदा दिइने छैन ।
- (५) घर बिदा बढीमा २१० (दुईसय दश) दिनसम्म सञ्चित गर्न पाइनेछ ।
- (६) शिक्षक अथवा कर्मचारी सेवाबाट अलग भएमा निजको सञ्चित रहेको घर बिदाबापत सो पदाधिकार रहेको पदबाट खाइपाइआएको तलबको दरले हुन आउने रकम एकमुष्ट लिन पाउनेछन् ।
- (७) सेवा कायम रहँदै कुनै शिक्षक, कर्मचारीको मृत्यु भएमा निजको सञ्चित रहेको घर बिदाको रकम मृत्यु हुँदाको अवस्थाको तलबको दरले हुने रकम निजको नजिकको हकवालाले पाउनेछ ।
- (८) हिउँदे वा बर्से बिदाको समय कार्यकारी परिषद्ले निर्धारण गरेबमोजिम हुनेछ ।
- (९) हिउँदे वा बर्से बिदा पाउने शिक्षकलाई बिदाको समयमा आवश्यकताअनुसार काम गराउनुपर्ने भएमा एक दिन काम गराएबापत एक दिनका दरले घर बिदा दिइनेछ ।
- (१०) उपनियम (९) बमोजिम आर्जन गरेको घर बिदा यसै नियमबमोजिम सट्टा बिदाको रूपमा उपभोग गर्न पाइनेछ ।

२५. विरामी बिदा : (१) शिक्षक वा कर्मचारीलाई १ वर्षको सेवाका लागि १५ दिनको पूरा तलबी वा ३० दिनको आधा तलबी विरामी बिदा दिन सकिनेछ ।

- (२) शिक्षक वा कर्मचारीले ७ दिनभन्दा बढी समयको विरामी बिदा बस्नुपरेमा सो बिदामा बस्ने शिक्षक वा कर्मचारीको बिदा स्वीकृत गर्ने अख्तियारवालालाई आवश्यक लागेमा विश्वविद्यालयबाट मान्यताप्राप्त चिकित्सकबाट विरामी भएको प्रमाणपत्र पेस गराउन सक्नेछ ।
- (३) शिक्षक वा कर्मचारीले यस नियमबमोजिम पाउने विरामी बिदा सञ्चित गरी राख्न सक्नेछ ।
- (४) उपनियम (३) मा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि असाधारण बिदामा बसेको अवधिको विरामी बिदा दिइने छैन ।
- (५) विश्वविद्यालयबाहेकको निकाय वा कार्यालयमा काजमा खटिएका शिक्षक, कर्मचारीलाई सो अवधिको विरामी बिदा दिइने छैन ।
- (६) उपनियम (३) बमोजिम सञ्चित विरामी बिदावापत कुनै शिक्षक वा कर्मचारी सेवाबाट अलग भएमा निजको पदाधिकार रहेको पदबाट खाइपाइआएको तलबको दरले हुन आउने रकम एकमुस्ट पाउनेछ ।
- (७) सेवा अवधिभित्र शिक्षक वा कर्मचारीको मृत्यु भएमा निजको सञ्चित विरामी बिदाको रकम मृत्यु हुँदाको अवस्थाको तलबको दरले हुन आउने रकम निजको प्रचलित कानूनबमोजिमको हकवालालाई प्रदान गरिनेछ ।
- (८) ठुलो वा कडा रोग लागी उपचार गर्न शिक्षक वा कर्मचारीले सञ्चित गरेको विरामी बिदा तथा घर बिदाबाट नपुग भएमा निजले पछि काम गरी पाउने १ वर्षको घर बिदा र विरामी बिदाबाट कट्टा हुने गरी ६० दिनसम्मको पेस्कीस्वरूप थप विरामी बिदा लिन सक्नेछ ।
- (९) उपनियम (८) बमोजिम लिएको बिदा समेतबाट नपुग भई थप बिदा लिनपरेमा कार्यकारी परिषदले तोकेका चिकित्सकहरूको समितिको सिफारिसमा शिक्षक वा कर्मचारीले पाउने असाधारण बिदाबाट कट्टा हुने गरी कार्यकारी परिषद्को निर्णयबाट सेवा अवधिभरमा बढीमा एक वर्षसम्मको विरामी बिदा दिन सकिनेछ ।
- (१०) पदाधिकारीसम्बन्धी नियममा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि विश्वविद्यालयको कुनै पनि शिक्षक वा कर्मचारी पदाधिकारीको पदमा नियुक्त भएमा सो पदमा काम गरेको अवधिको वार्षिक १५ दिनको दरले निजलाई विरामी बिदा दिन सकिनेछ ।

***२६. प्रसूति र प्रसूति सेवा बिदा :** (१) विश्वविद्यालयको स्थायी वा दुई वर्ष वा सो भन्दा बढी अस्थायी सेवामा कार्यरत कुनै महिला शिक्षक वा कर्मचारीलाई सुत्केरी हुनुभन्दा अघि वा पछि कम्तीमा ९८ (अन्ठानब्बे) दिनसम्मको विश्वविद्यालय सेवाअवधिमा बढीमा २ (दुई) पटकसम्म प्रसूति बिदा दिइनेछ ।

- (२) अस्थायी वा करारमा २ वर्ष भन्दा कम सेवाअवधि भएका महिला शिक्षक, कर्मचारीहरूलाई उपनियम (१) मा उल्लेख गरिएबमोजिम आधा तलवी प्रसूति बिदा दिइनेछ ।
- (३) पुरुष शिक्षक वा कर्मचारीको पत्नी प्रसूति हुँदा निजलाई १५ दिनको प्रसूति सेवा बिदा दिइनेछ ।

* शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली (छैठौँ संशोधन) २०७७ द्वारा संशोधित

- ♣(४) प्रसूति सेवा विदा लिएको शिक्षक वा कर्मचारीले विदा लिएको मितिले तीन महिनाभित्रमा बच्चाको जन्मदर्ता प्रमाणपत्र कार्यरत निकायमा पेस गर्नुपर्नेछ ।
- ♣(५) उपनियम (४) बमोजिमको अवधिभित्र त्यस्तो प्रमाणपत्र पेस नगर्ने शिक्षक वा कर्मचारीको त्यस्तो विदाको अवधि निजले पाउने अन्य विदाबाट कट्टा गरिनेछ ।
- ♣ (६) प्रसूति सेवा विदाको अभिलेख सम्बन्धित कार्यालयले अद्यावधिक गरी राख्नुपर्नेछ ।
- ♣(७) अतिरिक्त विदा : विश्वविद्यालयको स्थायी सेवामा कार्यरत महिलालाई विशेषज्ञ चिकित्सकको रायबमोजिम प्रजनन स्वास्थ्य रुग्णता (मर्बिडिटी) को कारणले जटिल शल्यक्रिया गर्नुपर्ने भएमा त्यस्तो शल्यक्रिया हुनु अघि वा पछि कम्तीमा तिस दिनसम्मको तलबसहितको अतिरिक्त विदा दिइनेछ ।

२७. पर्व विदा : (१) विश्वविद्यालयका शिक्षक तथा कर्मचारीहरूलाई वर्षभरिमा बढीमा ६ (छ) दिनसम्मको पर्व विदा दिइनेछ ।

(२) पर्व विदा सञ्चित गर्न पाइने छैन ।

२८. भइपरी आउने विदा : विश्वविद्यालयका शिक्षक वा कर्मचारीले एक वर्षमा बढीमा नौ दिनसम्मको भइपरी आउने विदा पाउनेछन् ।

(२) दैवी वा आकस्मिक परेकोमा बाहेक भइपरी आउने विदा पूर्वस्वीकृतिवेगर बस्न पाइने छैन र यो विदा सञ्चित गर्न पाइने छैन ।

२९. किरिया विदा : (१) विश्वविद्यालयका शिक्षक वा कर्मचारीको बाबु, आमा, लोग्ने वा स्वास्नी, छोरा वा छोरी, सासु, ससुरा वा बाजे, बजैँको मृत्यु भएको अवस्थामा वा आफैँ किरिया बस्नुपरेमा उक्त शिक्षक वा कर्मचारीलाई निजको संस्कारबमोजिम काजकिरिया गर्न १५ दिनसम्मको पूरा तलबी किरिया विदा दिइनेछ ।

३०. अध्ययन विदा : (१) विश्वविद्यालयमा स्थायी सेवामा रहेका कुनै पनि शिक्षक वा कर्मचारीलाई अध्ययन विदा दिन सकिनेछ ।

(२) उपनियम (१) मा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि ५० वर्षको उमेर नाघेका शिक्षक वा कर्मचारीलाई एक वर्षभन्दा बढी अवधिको अध्ययन विदा दिइने छैन ।

(३) स्वेच्छिक कार्यक्रमअन्तर्गत अध्ययन गर्नका लागि ६ महिना अगावै विदा स्वीकृति लागि सम्बन्धित निकायमा निवेदन दिनुपर्नेछ र सो अध्ययन अनुसन्धान सम्बन्धित निकायलाई उपयोगी हुने भएमा अध्ययन विदा दिन सकिनेछ ।

(४) विश्वविद्यालयमा प्राप्त भएको छात्रवृत्तिमा मनोनीत शिक्षक वा कर्मचारीलाई शैक्षिक उपाधि पाउने गरी १ शैक्षिक वर्ष वा सोभन्दा बढी अवधिसम्मका लागि पठाउने भएमा अध्ययन विदा दिइनेछ ।

(५) शैक्षिक उपाधि नपाउने भएमा वा १ वर्षभन्दा कम अवधिको अध्ययन भएमा वा तालिम मात्र भएमा अध्ययन काजमा पठाइनेछ ।

(६) अध्ययन काजका लागि दैनिक भत्ता तथा अन्य सुविधा कार्यकारी परिषद्ले तोकिएबमोजिम हुनेछ ।

◆(७) अध्ययन विदा शिक्षक तथा कर्मचारीको सेवा अवधिभरमा दुईपटक गरी जम्मा पाँच वर्षसम्म दिन सकिनेछ ।

♥(८) एक वर्षदेखि दुई वर्षसम्म अध्ययन विदा पाएका शिक्षक वा कर्मचारीले अध्ययन कार्य समाप्त भएपछि कम्तीमा तीन वर्ष र सोभन्दा बढी अध्ययन विदा पाएका शिक्षक वा कर्मचारीले कम्तीमा पाँच वर्ष विश्वविद्यालय सेवामा रही काम गर्नुपर्नेछ । यदि कुनै शिक्षक कर्मचारीले यस नियमानुसार सेवा नगरेमा अध्ययन अवधिभरको खाइपाइएको तलबभत्तावापतको रकम निजबाट असुलउपर गरिनेछ ।

(९) उपनियम (८) बमोजिम काम गर्न गराउन निजहरूलाई तोकिएबमोजिमको कबुलियत गराउनुपर्नेछ

(१०) अध्ययन विदा पाउने शिक्षक वा कर्मचारीले अध्ययनमा सन्तोषजनक प्रगति गरेको छैन भन्ने विश्वविद्यालयलाई जानकारी प्राप्त भएमा उक्त शिक्षक वा कर्मचारीलाई निजको विदा रद्द गरी फिर्ता बोलाउनुपर्नेछ ।

(११) उपनियम (४) र (५) बमोजिम अध्ययन विदामा जानेबाहेक अन्य कार्यक्रममा अध्ययन विदा लिई जान चाहने शिक्षक वा कर्मचारीले आफ्नो अध्ययन र कार्यक्रमको विवरण खुलाई छ, महिना अगावै तोकिएको अधिकारीसमक्ष निवेदन दिनुपर्नेछ ।

(१२) अध्ययन विदामा बस्ने शिक्षक वा कर्मचारीलाई अध्ययन विदाको समयमा सेवाअवधिमा सञ्चित हुने विरामी विदा दिन सकिनेछ ।

(१३) एक आर्थिक वर्षमा अध्ययन विदा दिन सकिने शिक्षक तथा कर्मचारीको अधिकतम सङ्ख्याको सीमा कार्यकारी परिषद्ले तोकिएबमोजिम हुनेछ ।

♥(१४) अध्ययन विदा अवधिभर नियमित पारिश्रमिक पाउने गरी अन्यत्र कतै काम गर्न पाइने छैन ।

३१. स्वाध्ययन विदा : (१) विश्वविद्यालयको स्थायी सेवामा लगातार ५ वर्ष काम गरेका शिक्षकलाई विश्वविद्यालयको काममा बाधा नपर्ने अवस्था भएमा शैक्षिक वा प्राज्ञिक अनुसन्धान गर्न १ वर्षको स्वाध्ययन विदा दिन सकिनेछ ।

(२) स्वाध्ययन विदा स्वीकृत गराउनुभन्दा अगाडि सम्बन्धित शिक्षकले अध्ययन अनुसन्धान कार्यको विवरण आफू कार्यरत रहेको निकायको प्रमुखमार्फत रजिष्ट्रारसमक्ष प्रस्तुत गर्नुपर्नेछ ।

(३) विदामा बस्दा तलब वा अन्य सुविधा वा पारिश्रमिक लिई वा नलिई काम गर्न पाइने छैन ।

(४) यस नियममा अन्यत्र जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि राष्ट्रिय वा अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा प्राप्त हुने प्राज्ञिक किसिमको अध्ययन वा अनुसन्धानसम्बन्धी फेलोसिपका लागि मनोनयन भई स्वाध्ययन विदा उपभोग गर्ने शिक्षकलाई तोकिएको पारिश्रमिक लिनबाट वञ्चित गरिने छैन ।

◆ शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली (तेस्रो संशोधन) २०७३ द्वारा संशोधित

♥ शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली (सातौं संशोधन) २०७८ द्वारा संशोधित

- (५) कार्यकारी परिषद्बाट अन्यथा निर्णय भएमा बाहेक नेपाल सरकार वा सार्वजनिक संस्थान वा सार्वजनिक महत्वको समिति वा काममा स्वाध्ययन विदामा बसेको शिक्षक सम्मिलित हुन पाउनेछ ।
- (६) उपनियम (१) बमोजिम स्वाध्ययन विदामा बस्ने शिक्षकले खाइपाइआएको *पूरा तलब पाउनेछ ।
- (७) स्वाध्ययन विदा सञ्चित हुने छैन ।
- (८) स्वाध्ययन विदा सम्बन्धित सङ्काय वा विश्वविद्यालयको निकायको प्रमुखको सिफारिसमा रजिष्ट्रारले स्वीकृत गर्नेछ ।

♥(९) उपनियम (१) को प्रयोजनका लागि स्वीकृत स्वाध्ययन विदा समाप्त हुनुभन्दा कम्तीमा ३० (तिस) दिनअगावै स्वाध्ययन विदा बसेका शिक्षकले उपनियम (१) बमोजिमको कार्यसम्पादन भई प्रतिवेदन प्रस्तुत भइसकेको प्रमाण पेस नगरेसम्म निजलाई सम्बन्धित निकायमा हाजिरी गराइने छैन। हाजिरी गराएमा हाजिरी गराउने पदाधिकारीलाई नियम ६७ बमोजिम विभागीय कारबाही गरेर हाजिर भएको शिक्षकको स्वाध्ययन विदा अवधिभरको तलबभत्ता हाजिरी गराउने पदाधिकारीबाट असुलउपर गरिनेछ ।

♥(१०) उपनियम (९) बमोजिम प्रस्तुत भएको प्रतिवेदनको अध्ययन रजिष्ट्रार, डीन वा सम्बन्धित निकायले तोकेको कार्यविधिअनुसार मुल्याङ्कन गर्ने गराइनेछ ।

♥(११) उपनियम (९) बमोजिम प्रतिवेदन पेस नगर्ने शिक्षकको स्वाध्ययन अवधिभरको तलब सुविधा असुलउपर गरिनेछ ।

३२. असाधारण विदा : (१) स्थायी शिक्षक वा कर्मचारीले असाधारण विदा लिनुपर्ने कारणसहित निवेदन दिनुपर्नेछ र सो कारण मनासिव देखिएमा विश्वविद्यालयले एकपटकमा एक वर्षमा नबढाई र सेवा अवधिभरमा तीन वर्षमा नबढाई असाधारण विदा दिन सकिनेछ ।

- (२) पाँच वर्ष यस विश्वविद्यालयमा सेवाअवधि नपुगेका शिक्षक वा कर्मचारीले असाधारण विदा पाउने छैन।
- (३) शिक्षक वा कर्मचारीले लिएको असाधारण विदाको अवधि निजको सेवाअवधिमा गणना गरिने छैन ।
- (४) असाधारण विदामा बस्ने शिक्षक तथा कर्मचारीले उक्त अवधिभर तलब पाउने छैनन् ।

३३. विशेष तलबी विदा : (१) पाँच वर्ष स्थायी सेवा गरेका कर्मचारीलाई १ (एक) महिनाको पूरा तलबी विदा दिन सकिनेछ ।

- (२) उपनियम (१) बमोजिमको विदा जतिसुकै समयसम्म पनि जम्मा हुन सक्नेछ ।
- (३) उक्त विदा एक पटकमा ३० (तिस) दिन र सेवा अवधिभर एक वर्षभन्दा बढी दिइने छैन ।
- (४) विशेष तलबी विदा नियम ३१ बमोजिमको स्वाध्ययन विदा नपाउने कर्मचारीले मात्र पाउनेछ ।
- (५) विशेष तलबी विदामा बस्ने कर्मचारीले सो अवधिमा आर्थिक लाभ हुने कुनै काम गर्न पाउने छैन ।
- (६) विश्वविद्यालयको सेवासम्बन्धी दक्षता हासिल गर्ने कार्यक्रममा संलग्न हुनका लागि मात्र यो विदा दिइनेछ।

(७) विशेष तलबी बिदा उपभोग गर्न नपाएको कर्मचारी विश्वविद्यालय सेवाबाट निवृत्तिभरण पाउने गरी निवृत्त हुँदा निजले सो बिदा उपभोग नगरेबाफत निजको सेवाको अनुपातिक हिसाबमा बढीमा ४ (चार) महिनाको खाइपाइआएको तलब बराबरको रकम प्रदान गर्न सकिनेछ ।

३४. बिदा सञ्चित : शिक्षक वा कर्मचारी विश्वविद्यालय सेवाभित्रको एक पदबाट अर्को पदमा सरुवा वा नियुक्त भएमा निजको सरुवा वा नियुक्त हुँदाको बखत सञ्चित रहेका सबै किसिमका बिदा नयाँ पदमा बहाल गरी सञ्चय गरेको बिदासरह मानिनेछ ।

३५. बिदा उपभोग : (१) यस नियमावलीमा अन्यत्र जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि कार्यकारी परिषद्ले अत्यावश्यक सेवाको रूपमा वर्गीकरण गरी तोकिएका सेवासँग सम्बन्धित कर्मचारीहरूले कुनै पनि सार्वजनिक बिदा उपभोग गर्न पाउने छैनन् ।

(२) उपनियम (१) बमोजिम बिदा उपभोग गर्न नपाउने कर्मचारीहरूले १ वर्षमा ७० दिनको सट्टा बिदा पाउनेछन् ।

(३) प्रत्येक आर्थिक वर्षको अन्तमा उपभोग नगरी बाँकी रहेको सट्टा बिदाको रकम खाइपाइआएको तलबको अनुपातमा निजहरूलाई दिइनेछ ।

३६. बिदा अधिकार नहुने : बिदा अधिकारको रूपमा मानिने छैन । विश्वविद्यालयको काममा बाधा नपर्ने गरी दिइने सुविधा मात्र मानिनेछ । विरामी बिदा, किरिया बिदा र सुत्केरी नै हुँदाको प्रसूति बिदाबाहेक कुनै पनि बिदा पूर्वस्वीकृति बेगर उपभोग गर्न सकिने छैन ।

३७. बिदा स्वीकृत गर्ने अधिकारी : (१) बिदा स्वीकृत गर्ने तोकिएको अख्तियारवाला हुनेछ ।

(२) विश्वविद्यालयको अत्यावश्यकताअनुसार असाधारण बिदा वा स्वाध्ययन बिदा वा अध्ययन विदामा रहेका शिक्षक वा कर्मचारीलाई फिर्ता बोलाई सेवामा लगाउन सकिनेछ ।

परिच्छेद ६


तलब, भत्ता, औषधि उपचार, चाडपर्व खर्च र सुविधाहरू

३८. तलब भत्ता : (१) विश्वविद्यालय सेवामा बहाल रहेका शिक्षक तथा कर्मचारीले आफ्नो पदमा बहाली गरेको दिनदेखि बहाली गरेको पदको तलब, भत्ता, र अन्य सुविधा पाउनेछन् ।

(२) विश्वविद्यालय सेवामा नियुक्त भएका शिक्षक तथा कर्मचारीले विश्वविद्यालय सेवामा रही काम गरेबापत पाउने तलब, भत्ता, र अन्य सुविधा कार्यकारी परिषद्ले समय समयमा निर्धारण गरेबमोजिम हुनेछ ।

(३) यस नियमबमोजिम सजाय पाएको व्यवस्थामा बाहेक प्रत्येक शिक्षक तथा कर्मचारीलाई एक वर्षको सेवा पूरा गरेपछि प्रतिवर्ष एक ग्रेड तलब वृद्धि दिइनेछ ।

(४) रोकका भएको तलबवृद्धि फुक्का भएमा सो तलबवृद्धिको मिति सम्बन्धित अधिकारीले लिखित रूपमा अभिलेखमा जनाइराख्नुपर्नेछ ।

 (५) सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय अन्तर्गतका विभिन्न निकायहरूमा कार्यरत शिक्षक र कर्मचारीहरूले खाइपाई आएको पारिश्रमिकको अतिरिक्त नेपाल सरकारले दिए अनुसारको दुर्गम/स्थानीय भत्ता पाउने छैन ।

३९. तलब भुक्तानी : (१) विश्वविद्यालय सेवामा कार्यरत रहेका शिक्षक तथा कर्मचारीलाई प्रत्येक महिना समाप्त भएपछि तलबभत्ताको भुक्तानी दिइनेछ ।

(२) शिक्षक वा कर्मचारीले पकाएको तलबभत्ता निज सेवामा नरहे पनि निजले उक्त तलबभत्ता पाउनेछ ।

(३) प्रचलित कानून र यस नियममा व्यवस्था भएकोमा बाहेक शिक्षक तथा कर्मचारीको तलब कट्टा गरिने छैन । यस नियमबमोजिम तलब नपाउने भनी तोकिएको अवस्थामा बाहेक शिक्षक तथा कर्मचारीले पाउने तलबभत्ता काम गरिरहेको वा विदामा बसेको अवस्थामा पनि पाउने छ ।

(४) कार्यकारी परिषद्ले तोकेबमोजिम पदमा कार्यरत कर्मचारीहरूलाई तोकेबमोजिमको लुगा, गरम सुट, बुट, बर्सादी, ओभरकोट र जुता दिन सकिनेछ ।

४०. दैनिक तथा भ्रमणभत्ता : शिक्षक तथा कर्मचारीले विश्वविद्यालयको कामको सिलसिलामा पाउने दैनिक तथा भ्रमणभत्ता र अन्य सुविधा कार्यकारी परिषद्ले तोकिएबमोजिम हुनेछ ।

४१. पारिवारिक दैनिक तथा भ्रमणभत्ता : शिक्षक तथा कर्मचारीहरू सुरुवा हुँदा पाउने पारिवारिक दैनिक तथा भ्रमणभत्ता कार्यकारी परिषद्बाट तोकिएबमोजिम हुनेछ ।

४२. निलम्बनको अवधिको तलब : (१) यस नियमबमोजिम कुनै शिक्षक वा कर्मचारी निलम्बन परेमा निजले आफ्नो खाइपाईआएको तलबको आधा तलब पाउनेछ ।

(२) उपनियम (१) मा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि निजउपर लगाइएको अभियोग प्रमाणित नभई सफाई पाएमा निलम्बनमा रहेको अवधिमा आधा तलब लिइसकेको भए सो कट्टा गरी र नलिएको भए पूरै तलब (तलब वृद्धि हुने भएमा सोसमेत) पाउनेछ ।

(३) निलम्बित भएको शिक्षक, कर्मचारी कसुरदार ठहरी सेवाबाट हटाइएमा निलम्बन भएको मितिदेखिको बाँकी तलब पाउने छैन ।

(४) विश्वविद्यालय सेवामा कार्यरत शिक्षक वा कर्मचारी नैतिक पतन देखिने फौजदारी अभियोगमा वा प्रचलित कानूनबमोजिम थुनामा रहेमा सो थुना अवधिभर स्वतः निलम्बन भएको मानिनेछ ।

(५) स्वतः निलम्बन रहेको शिक्षक, कर्मचारीले निलम्बन अवधिभरको तलबभत्ता पाउने छैन । तर अभियोगबाट सफाई पाएमा निजले सम्पूर्ण तलबभत्ता पाउनेछ ।

४३. चाडपर्व खर्च : विश्वविद्यालय सेवामा कार्यरत रहेका शिक्षक तथा कर्मचारीहरूलाई निजले खाइपाईआएको एक महिनाको तलब बराबरको रकम प्रत्येक वर्ष चाडपर्व खर्चको रूपमा दिइनेछ ।

(२) चाडपर्व विदाभन्दा अघि कम्तीमा ६ महिनाको सेवा अवधि पूरा नभएका अस्थायी शिक्षक वा कर्मचारीलाई पेस्कीको रूपमा चाडपर्व खर्च दिइनेछ ।

(३) उपनियम (२) बमोजिम चाडपर्व खर्च लिई विश्वविद्यालयमा ६ महिनाभन्दा कम अवधि सेवा गरी छाडेमा सो रकम सम्बन्धित शिक्षक वा कर्मचारीबाट असुलउपर गरिनेछ ।^घ

४४. औषधि उपचार खर्च: (१) विश्वविद्यालय सेवामा सेवारत स्थायी शिक्षक तथा कर्मचारीले आफ्नो सेवाअवधिमा असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं अधिकृत र सोभन्दा माथिका शिक्षक तथा कर्मचारीले पन्ध्र महिना बराबरको रकम औषधिउपचार खर्चबापत पाउने छन् ।

(२) सहायक स्तरका कर्मचारीले निजहरूले खाइपाइआएको १८ महिनाको तलब बराबरको औषधिउपचार खर्च पाउनेछन् ।

(३) सपोर्ट स्टाफ स्तरका कर्मचारीले निजहरूले खाइपाइआएको २१ महिनाको तलब बराबरको औषधि उपचार खर्च पाउनेछन् ।

(४) विश्वविद्यालय सेवामा कार्यरत शिक्षक वा कर्मचारी वा निजको परिवारको सदस्य विरामी भएमा उपनियम (१), (२) र (३) बमोजिम पाउने रकममा कट्टा हुने गरी देहायबमोजिम भएको उपचार खर्च दिइनेछ :

(क) रोगको उपचारका निमित्त स्वीकृत चिकित्सकले जाँच गर्दा लागेको शुल्क तथा जाँच गरी लेखिएको प्रेस्क्रिप्सनअनुसार औषधि किनेको खर्च,

(ख) नर्सिङ होम वा अस्पतालमा भर्ना हुँदा लागेको विलबमोजिम खर्च ।

(५) भविष्यमा विश्वविद्यालय सेवाबाट अयोग्य ठहर्ने गरी सेवाबाट बरखास्त गरिएका बाहेक अन्य जुनसुकै बेहोराबाट कुनै शिक्षक तथा कर्मचारी सेवाबाट अलग हुँदा यस नियमबमोजिम पाउने उपचार खर्चमध्ये केही लिई वा नलिई उपचार खर्च लिन बाँकी रहेको भए सो बाँकी रकम एकमुष्ट लिन पाउनेछ । यसरी बाँकी रहेको रकम एकमुष्ट लिँदा २० वर्षसम्म सेवा गरेकालाई १० प्रतिशत थप २० वर्ष भन्दा बढी २५ वर्ष सेवा गरेकालाई १५ प्रतिशत र २५ वर्षभन्दा बढी सेवा गरेकालाई २० प्रतिशत थप हुने गरी हुन आउने रकम एकमुष्ट लिन पाउनेछ ।

(६) कुनै शिक्षक वा कर्मचारी विरामी भएमा औषधि उपचारको लागि निकास दिँदा २० वर्षको अवधिलाई सेवाको पूरा अवधि मानी त्यसको अनुपातमा विरामी हुने शिक्षक वा कर्मचारीले गरेको सेवा अवधिले हिसाब गरी यस नियमबमोजिम औषधि उपचार खर्च दिइनेछ । सेवा अवधि गणना गर्दा अस्थायी वा करार सेवा अटुट राखी स्थायी भएको अवधिलाई समेत गणना गरिनेछ ।

४५. विश्वविद्यालय सेवा पदकको व्यवस्था : विश्वविद्यालय सेवामा अनिवार्य अवकाश प्राप्त गरेका वा कम्तीमा २५ वर्ष विश्वविद्यालय सेवा गरेका शिक्षक तथा कर्मचारीलाई कार्यकारी परिषद्बाट तोकिएबमोजिमको सेवा पदक, प्रमाणपत्र र नगद पुरस्कार प्रदान गर्न सकिनेछ ।

४६. दाहसंस्कार खर्च : विश्वविद्यालय सेवामा कार्यरत रहेको अवस्थामा कुनै पदाधिकारी वा शिक्षक वा कर्मचारीको मृत्यु हुँदा दाहसंस्कारबापत रु. ५०,०००/- मृतक व्यक्तिको हकदारलाई दिइनेछ ।

४७. प्राथमिकता र सहूलियत : विश्वविद्यालयमा कार्यरत तथा पूर्व पदाधिकारी, शिक्षक तथा कर्मचारीहरूलाई विश्वविद्यालयका निकायहरूबाट सेवा लिनुपर्ने भएमा कार्यकारी परिषद्बाट तोकिएबमोजिमको प्राथमिकता र सहूलियत प्रदान गरिनेछ ।

• शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली (छैटौँ संशोधन) २०७७ द्वारा संशोधित

४८. चेयर प्रदान : (१) विश्वविद्यालयबाट वा कुनै राष्ट्रिय वा विदेशी वा अन्तर्राष्ट्रिय संस्था वा व्यक्तिबाट स्थापित चेयर तोकिएको शैक्षिक, प्राज्ञिक वा अनुसन्धानसम्बन्धी कार्य गर्ने विश्वविद्यालय सेवाका अवकाशप्राप्त वा बहालवाला शिक्षकहरूमध्ये उपयुक्त शिक्षकलाई सम्बन्धित विद्या परिषद्को सिफारिसमा कार्यकारी परिषद्ले चेयर प्रदान गर्न सक्नेछ ।

(२) उपनियम (१) बमोजिमको चेयरको व्यवस्था, सुविधा, सर्त र अन्य कार्यविधि प्राज्ञिक परिषद्को सिफारिसमा कार्यकारी परिषद्बाट तोकिएबमोजिम हुनेछ ।

४९. मरणोपरान्त अनुदान : विश्वविद्यालय सेवाका स्थायी शिक्षक वा कर्मचारीको सेवाअवधिमा मृत्यु भएमा निजका हकवालालाई एकमुष्ट रु. ५०,०००/- (पचास हजार रुपैयाँ) दिइनेछ ।

(२) हकवालाको निर्धारण निवृत्तिभरणसम्बन्धी नियमानुसार नै हुनेछ ।

परिच्छेद ७

अवकाश

५०. अनिवार्य अवकाश : (१) विश्वविद्यालयका शिक्षक तथा कर्मचारीलाई निजको उमेर ६३ वर्ष पूरा भएपछि विश्वविद्यालय सेवाबाट अनिवार्य अवकाश दिइनेछ ।

(२) यस नियमावलीमा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि माथि उपनियम (१) बमोजिम अनिवार्य अवकाशमा पर्ने शिक्षक वा कर्मचारी जुनसुकै प्रक्रियाबाट विश्वविद्यालय सेवामा यो नियम प्रारम्भ हुनु अघिल्लो दिनसम्म नियुक्त भइआएकोमा निजको उपदान वा निवृत्तिभरण वा अन्य सुविधाको प्रयोजनका लागि निजको हकमा विश्वविद्यालय सेवाअवधि निजको उमेर ६३ वर्षको आधार मानिनेछ ।

(३) उपनियम (१) बमोजिम अवकाशप्राप्त शिक्षक वा कर्मचारीलाई विश्वविद्यालयअन्तर्गत सञ्चालित हुने आयोजनाहरूका रिक्त पदमा करारमा नियुक्ति गर्दा योग्यता र दक्षताको आधारमा प्राथमिकता दिन सकिनेछ ।

(४) यस नियमको प्रयोजनको लागि शिक्षक, कर्मचारीको उमेरको गणना गर्दा सेवामा प्रवेश गर्दा निजले पेस गरेको शिक्षण संस्थानको प्रमाणपत्रमा उल्लेख भएको जन्मदिन वा वर्षबाट हुन आउने उमेर वा नागरिकताको प्रमाणपत्रमा उल्लेख भएको जन्मदिन वा वर्षबाट हुन आउने उमेर वा निजले भरेको वैयक्तिक विवरण (सिटरोल) मा लेखिदिएको जन्ममिति वर्ष दिनबाट हुन आएको उमेरमध्ये जुन उमेरबाट निज पहिले अवकाश पाउने हो सोही आधारमा उमेर गणना गरिनेछ ।

(५) वर्ष वा संवत् मात्र उल्लेख भएको प्रमाणपत्रका आधारमा जन्म मिति कायम गर्दा देहायबमोजिम कायम गरिनेछ :

क) नागरिकताको प्रमाणपत्रको हकमा प्रमाणपत्र प्राप्त गरेको मितिका आधारमा,

ख) शैक्षिक योग्यताको प्रमाणपत्रको हकमा प्रमाणपत्र जारी भएको मितिको आधारमा,

ग) सिटरोलको हकमा सुरु भर्ना भएको मितिको आधारमा ।

(६) कुनै प्रमाणपत्रमा वर्ष मात्र उल्लेख भएको र अर्को प्रमाणपत्रमा पूरा जन्ममिति खुलेको रहेछ भने त्यस्तो प्रमाणपत्रमा उल्लिखित जन्ममितिहरूको बिचमा एक वर्षसम्मको अन्तर देखिएमा पूरा खुलेको जन्म मितिलाई आधार मान्नुपर्नेछ ।

(७) माथि उपनियम (५) र (६) मा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि छुट्टाछुट्टै प्रमाणपत्रमा उल्लेख भएको जन्ममितिको अन्तर एकवर्ष भन्दा बढी भएमा वर्षमात्र उल्लेख भएको प्रमाणपत्रको आधारमा उपनियम (५) र (६) बमोजिम जन्ममिति कायम गरिनेछ ।

♥(८) उमेरको कारणबाट अनिवार्य अवकाश पाउने शिक्षक, कर्मचारीलाई अवकाश पाउने मितिसमेत खुलाई ६ महिना अगावै सामान्य प्रशासन महाशाखाले अनिवार्य रूपमा जानकारी गराउनुपर्नेछ । सोबमोजिम जानकारी नगराएका कारणले कुनै शिक्षक कर्मचारीले अवकाश अवधिभन्दा बढी सेवा गर्नुपरेको अवस्थामा अवकाश अवधिपछि जति अवधि सेवा गरेको छ सो अवधिभरको नियमानुसार तलबभत्ता दिनुपर्नेछ ।

५१. स्वेच्छिक अवकाश : (१) २० वर्षसम्म स्थायी सेवा गरिसकेका शिक्षक वा कर्मचारीलाई निजको इच्छा भएमा नियुक्ति गर्ने अधिकारीले सेवाबाट अवकाश लिन अनुमति दिन सक्नेछ ।

५२. सेवा अवधिको गणना : (१) यस नियमावलीको परिच्छेद (७) र (८) को प्रयोजनको लागि सेवाअवधि गणना गर्दा विश्वविद्यालय सेवामा अस्थायी सेवामा वा पूर्णकालीन करार सेवामा रही अटुट सेवा गरी स्थायी भएको र स्थायी नियुक्त भई सेवा गरेको परीक्षणकालको अवधि तथा निलम्बनमा रहेको अवधिलाई समेत गणना गरिनेछ ।

♥(२) विश्वविद्यालयका शिक्षक वा कर्मचारी विश्वविद्यालय सेवाका लागि अयोग्य हुने गरी बरखास्त भएकोमा पछि कुनै कारणले सो अयोग्यता प्रमाणित नभई निज शिक्षक वा कर्मचारीको स्थायी नियुक्ति भएमा सो शिक्षक वा कर्मचारीको सेवाअवधि जोडिनेछ ।

(३) विश्वविद्यालयको शिक्षक वा कर्मचारीले अन्यत्र काममा रहेको अवस्थाको सेवा अवधि गणना गर्दा सो निकायबाट निवृत्तिभरण वा उपदान लिएमा सो अवधि विश्वविद्यालयको उपदान र निवृत्तिभरणको प्रयोजनको लागि गणना गरिने छैन ।

(४) उपनियम (१), (२) र (३) मा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि विश्वविद्यालयको ऐनको दफा (३) को उपदफा (२) बमोजिम यस विश्वविद्यालयमा गाभिन आएका शिक्षक तथा कर्मचारीहरू यस विश्वविद्यालय सेवामा प्रवेश गरेको मानिनेछ र निजहरूले सेवा सुरु गरेको साविक अवधिदेखि नै उपदान वा निवृत्तिभरणको प्रयोजनका लागि सेवाअवधि गणना गरिनेछ ।

(५) विश्वविद्यालय सेवामा स्थायी नियुक्त भई काम गरिरहेका कुनै प्रशासनिक कर्मचारी नियमानुसार शिक्षणतर्फ नियुक्त भएमा निजले प्रशासनिक पदमा रही सेवा गरेबापत पाउने उपदान वा निवृत्तिभरण नलिएमा मात्र निजको सेवाअवधि उपदान वा निवृत्तिभरणका प्रयोजनका लागि शिक्षणतर्फ जोडी गणना गरिनेछ । यो नियम सोही प्रक्रियाअनुसार शिक्षणबाट प्रशासनतर्फ आउने शिक्षकलाई पनि लागु हुनेछ ।

♥ शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली (सातौं संशोधन) २०७८ द्वारा संशोधित

- (६) उपनियम (४) र (५) मा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि अस्थायी वा विकासतर्फको नियुक्तिको अवधिलाई उपदान वा निवृत्तिभरणको प्रयोजनका लागि सेवाअवधिमा गणना गर्दा सम्बन्धित शिक्षक वा कर्मचारी विश्वविद्यालय सेवामा स्थायी नियुक्ति हुँदाको बखत निजबाट विश्वविद्यालयमा पेस भइसकेको वा विश्वविद्यालयको अभिलेखमा रहेका आधिकारिक प्रमाणलाई आधार मानी मान्यता दिई सेवाअवधिको गणना गरिनेछ ।
- (७) उच्च अध्ययनको लागि बिदा स्वीकृत गराई अध्ययन विदामा बसेको तर सो अध्ययन पूरा नगरी फर्केको हकमा भने निज अध्ययन गर्न गएको अवधि यस नियमको प्रयोजनको लागि सेवाअवधिमा गणना गरिने छैन ।

परिच्छेद ८

उपदान र निवृत्तिभरण

- ♣ ५३. उपदान तथा निवृत्तिभरण : (१) सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय ऐन, २०६७ को दफा ३(२) बमोजिम विश्वविद्यालय स्थापना हुँदा तत्काल विश्वविद्यालयमा समावेश भएका त्रिभुवन विश्वविद्यालयका आंगिक र सम्बन्धन प्राप्त क्याम्पसका शिक्षक तथा कर्मचारीहरु, विभिन्न मितिमा सेवा आयोगको प्रक्रिया पुरा गरी स्थायी नियुक्ति भएका शिक्षक तथा कर्मचारीहरु र सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय सेवा आयोगको विज्ञापन नं. १२-२०७२/०७३ अनुसार सेवा आयोगको प्रक्रिया पुरा गरी स्थायी नियुक्ति भएका शिक्षक तथा कर्मचारीको प्रवेशलाई अन्तिम पटक मानी निजहरुले सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय आर्थिक प्रशासन नियमावली, २०६९ को नियम १०७ बमोजिम स्थापित उपदान तथा निवृत्तिभरण कोषबाट निवृत्तिभरण पाउने छन ।
- ♣ (२) उपनियम (१) बमोजिम निवृत्तिभरण पाउने शिक्षक तथा कर्मचारीहरुको तलबबाट निवृत्तिभरणको प्रयोजनका लागि कुनै रकम कट्टी गरिने छैन ।
- ♣ (३) उपनियम (१) मा उल्लेख भएका शिक्षक तथा कर्मचारीहरु बाहेक विश्वविद्यालयको स्थायी सेवामा प्रवेश गर्ने शिक्षक तथा कर्मचारीहरुलाई यस नियमावलीको नियम ५४ (क) बमोजिमको योगदानमा आधारित उपदान सम्बन्धी व्यवस्था लागु हुनेछ ।
५४. उपदान : (१) पाँच वर्ष वा सोभन्दा बढी स्थायी सेवा गरेको तर निवृत्तिभरण पाउने अवधि नपुगेका शिक्षक वा कर्मचारीले अवकाश पाएमा वा राजीनामा स्वीकृत गराई विश्वविद्यालय सेवाबाट अलग भएमा वा विश्वविद्यालय सेवाको निमित्त भविष्यमा अयोग्य नठहरिने गरी विश्वविद्यालय सेवाबाट हटाइएमा देहायबमोजिमको उपदान पाउनेछन् :
- (क) ५ वर्षदेखि १० वर्षसम्म विश्वविद्यालय सेवामा रहेका शिक्षक वा कर्मचारीले विश्वविद्यालय सेवामा आफू रहेको प्रत्येक वर्षको निमित्त खाइपाइआएको आखिर तलबले आधा महिनाको तलब,

- (ख) १० वर्षभन्दा बढी १५ वर्षसम्म विश्वविद्यालय सेवामा रहेका शिक्षक वा कर्मचारीले विश्वविद्यालय सेवामा आफू रहेको प्रत्येक वर्षका निमित्त खाइपाइआएको आखिरी तलबको दरले १ महिनाको तलब,
- (ग) १५ वर्षभन्दा बढी २० वर्ष पूरा नभएसम्म विश्वविद्यालय सेवामा रहेका शिक्षक वा कर्मचारीले विश्वविद्यालय सेवामा आफू रहेको प्रत्येक वर्षका निमित्त खाइपाइआएको आखिरी तलबको ४५ दिनको तलब ।
- (२) उपनियम (१) को खण्ड (क), (ख) र (ग) अनुसार उपदानको रकम शिक्षक वा कर्मचारी अवकाश हुँदाको अवस्थामा विश्वविद्यालयका प्रचलित तलब स्केलको सुरु तलब अङ्कको हिसाबले हुने क्रमशः ६ महिना, १२ महिना र १८ महिनाको तलबभन्दा बढी हुन सक्ने छैन ।^६
- (३) विश्वविद्यालयको कुनै निकायको पद नै नचाहिने भई खारेजीमा परेको वा शारीरिक अस्वस्थताको कारणले विश्वविद्यालय सेवामा रहन असमर्थ भएको कुनै शिक्षक वा कर्मचारीले कम्तीमा ३ वर्ष पूरा सेवा गरेको रहेछ र निजको सेवाको जम्मा अवधिमा ५ वर्ष थपेमा निवृत्तिभरण पाउने अवधि पुग्दैन भने खारेजीमा परेको वा शारीरिक अस्वस्थताको कारणले विश्वविद्यालयको सेवा गर्न असमर्थ भएको अवधिसम्मको निजको सेवाको जम्मा ५ वर्ष थपी हुन आउने अवधिको हिसाबले निजलाई यस नियमबमोजिम उपदान दिनुपर्नेछ ।
- (४) विश्वविद्यालयको सेवा पाउन वा सो सेवामा बहाल रहने उद्देश्यले शिक्षासम्बन्धी कुनै योग्यता तीन पुस्तेवारी, नाम, थर, वतन, नागरिकता भन्नु प्रमाणित हुन आएमा यो नियमबमोजिम त्यस्तो शिक्षक कर्मचारीलाई उपदान दिइने छैन ।

♦५४(क) योगदानमा आधारित उपदानसम्बन्धी व्यवस्था : योगदानमा आधारित उपदान दिने प्रयोजनको

लागि सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालयबाट स्थापित उपदान तथा निवृत्तिभरण कोषबाट देहायबमोजिम व्यवस्था गरिनेछ :

- (१) स्थायी शिक्षक कर्मचारीहरूको मासिक तलबबाट दश प्रतिशतका दरले कटौती गरी सो रकममा त्यति नै रकम सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालयबाट थप गरिनेछ,
- (२) कोषको रकम शिक्षक कर्मचारीको व्यक्तिगत खाता खोली नागरिक लगानी कोष वा नेपाल सरकारबाट मान्यता प्राप्त बैङ्क वा वित्तीय संस्थामा जम्मा गरिनेछ,
- (३) उपनियम (२) बमोजिमको रकम, सोबाट अर्जित ब्याज र प्रतिफलसमेत सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावलीको परिच्छेद ७ बमोजिम सेवाबाट अवकाश प्राप्त गर्दा शिक्षक कर्मचारीले एकमुष्ट फिर्ता पाउनेछन् तर सोही नियमावलीको परिच्छेद ११ को नियम ६७ को उपनियम (ख) (२) बमोजिम भविष्यमा विश्वविद्यालय सेवाको निमित्त अयोग्य ठहरिने गरी सेवाबाट हटाइएका वा बरखास्त गरिएका शिक्षक तथा कर्मचारीले उक्त कोषमा निजको तलबबाट कटौती गरी जम्मा गरिएको रकम, सोबाट अर्जित ब्याज र प्रतिफल मात्र फिर्ता पाउनेछन् ।

♣ शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली (आठौँ संशोधन) २०८० द्वारा संशोधित

♦ शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली (छैटौँ संशोधन) २०७७ द्वारा थप

- (४) सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय शिक्षक कर्मचारी सेवा नियमावली २०६९, को नियम ११० क. र ११० ख. बमोजिम नियुक्त शिक्षक कर्मचारीका हकमा आबद्ध भइआउने क्याम्पसबाट उपदान कोषको रकम ल्याइआएमा उपनियम (२) बमोजिम सम्बन्धित शिक्षक कर्मचारीको खातामा जम्मा गरी निरन्तरता दिइनेछ ।

५५. निवृत्तिभरण : (१) २० वर्ष वा सोभन्दा बढी अवधि विश्वविद्यालय सेवामा कार्यरत शिक्षक वा कर्मचारीले अवकाश प्राप्त गरेको मितिदेखि जीवनपर्यन्त देहायबमोजिम मासिक निवृत्तिभरण पाउने छन् :

जम्मा सेवा वर्ष × आखिरी तलबको रकम

५०

- (२) यस नियमअनुसार पाउने निवृत्तिभरणको मासिक रकम सम्बन्धित शिक्षक वा कर्मचारीले खाइपाइआएको मासिक तलबको ५० प्रतिशत भन्दा घटी हुने छैन ।
- (३) विश्वविद्यालयलाई आफ्नो कुनै निकाय वा पद नै आवश्यक नभई खारेज गर्नुपरेमा वा शारीरिक अस्वस्थताका कारणले विश्वविद्यालयको सेवा गर्न असमर्थ भएको वा मृत्यु भएको कुनै शिक्षक वा कर्मचारीको सेवाको जम्मा अवधिमा ५ वर्षसम्म थपमा निवृत्तिभरण पाउन सक्ने भएमा निवृत्तिभरण पाउने अवधि पुग्याउने प्रयोजनको लागि बढीमा ५ वर्षसम्म थपिनेछ ।
- (४) विश्वविद्यालयको कुनै पदमा पहिला गरेको सेवाबापत निवृत्तिभरण पाइरहेको भूतपूर्व शिक्षक वा कर्मचारी पछि विश्वविद्यालयको शिक्षक वा कर्मचारीको पदमा नियुक्त भएमा निजले पछि गरेको सेवाबापत यो नियमबमोजिम निवृत्तिभरण पाउने छैन ।
- (५) विश्वविद्यालयको सेवा पाउने वा सो सेवामा बहाल हुने उद्देश्यले शिक्षासम्बन्धी योग्यता, तीन पुस्ता, उमेर, नाम, बतन, नागरिकता ढाँटेको प्रमाणित हुन गएमा यो नियमबमोजिम निवृत्तिभरण दिइने छैन ।

५६. निवृत्तिभरण वृद्धि : (१) विश्वविद्यालयका शिक्षक वा कर्मचारीलाई देहायको अवस्थामा निवृत्तिभरण वृद्धि गरिनेछ :

- (क) बहालवाला शिक्षक वा कर्मचारीको तलब वृद्धि हुँदा तलबको सुरु अङ्कमा जति वृद्धि भएको छ, त्यसको दुईतिहाइ रकम समान पदमा निवृत्त भएका शिक्षक वा कर्मचारीको निवृत्तिभरण रकममा पनि थप गरिनेछ,
- (ख) विश्वविद्यालय सेवाबाट निवृत्त भएका भूतपूर्व शिक्षक, कर्मचारीलाई खाइपाइआएको मासिक निवृत्तिभरण बराबरको रकम दसैं खर्चबापत दिइनेछ ।

५७. पारिवारिक निवृत्तिभरण : (१) यस नियमबमोजिम पारिवारिक निवृत्तिभरण देहायबमोजिम हुनेछ :

- (क) कुनै शिक्षक वा कर्मचारी विश्वविद्यालयको सेवामा छँदै वा सेवा निवृत्तिभरण पाउन थालेको ७ वर्ष नपुग्दै मृत्यु भएमा यस नियमावलीमा व्यवस्था गरेअनुसार निजको परिवारलाई नियम ५५ मा लेखिएको दरले निवृत्तिभरण प्रदान गरिनेछ,

- (ख) खण्ड (क) बमोजिम निवृत्तिभरण पाउन थालेको ७ वर्ष नपुग्दैन मृत्यु भएका शिक्षक वा कर्मचारीको परिवारलाई ७ वर्ष पुगेपछि निवृत्तिभरण प्राप्त हुने छैन,
- (ग) शिक्षक वा कर्मचारीको विधुर पति वा विधवा पत्नीको हकमा निजले निजको पति वा पत्नी विश्वविद्यालय सेवामा हुँदै वा निवृत्तिभरण पाउन थालेको ७ वर्ष नपुग्दै मृत्यु भएमा यस नियमावलीबमोजिम पारिवारिक निवृत्तिभरण पाउने भएमा सो निवृत्तिभरण पाउने अवधि भुक्तान भएको मितिदेखि निजले पाउने निवृत्तिभरणको आधा रकम आजीवन पाउनेछ,
- (घ) खण्ड (ग) मा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि निवृत्तिभरण पाउनेले पुनः वैवाहिक सम्बन्ध कायम गरेमा यो सुविधा पाउने छैन,
- (ङ) यस नियमबमोजिम उपदान तथा निवृत्तिभरण भुक्तानी गर्दा मृतक शिक्षक वा कर्मचारीले आफ्नो परिवारको सदस्यमध्येमा वा आफ्नो नाबालक भाइ वा अविवाहिता दिदी, बहिनी कसैलाई इच्छाएको रहेछ भने सो व्यक्तिलाई र कुनै कारणले सो व्यक्तिले पाउन नसक्ने अवस्था भएमा सो शिक्षक वा कर्मचारीको परिवारको सदस्यमध्ये कानुनी हकवालालाई दिइनेछ,
- (च) खण्ड (ङ) को प्रयोजनका लागि परिवार भन्नाले शिक्षक वा कर्मचारीको आफैँसँग बस्ने तथा आफैँले पालनपोषण गर्नुपर्ने पति, पत्नी, छोरा वा धर्मपुत्र अविवाहिता छोरी वा अविवाहिता धर्मपुत्री जनाउनेछ ।

५८. असाधारण पारिवारिक निवृत्तिभरण : (१) कुनै शिक्षक वा कर्मचारीको तत्कालै मृत्यु भएमा वा ठुलो

चोटपटक लागी त्यसको कारणबाट निको नहुँदै पछि मृत्यु भएमा निजको विधुर पति वा विधवा पत्नीलाई कार्यकारी परिषद्बाट तोकिएबमोजिमको छुट्टै आजीवन पारिवारिक निवृत्तिभरण दिइनेछ ।

- (२) उपनियम (१) को प्रयोजनको लागि विधुर पति वा विधवा पत्नीलाई देहायबमोजिमको अवस्थामा मात्र मान्यता दिइनेछ ।

क) विश्वविद्यालय सेवाको कारणबाट मृत्यु हुने घटनाअघि शिक्षक वा कर्मचारीसँग वैवाहिक सम्बन्ध भइसकेको हुनुपर्नेछ ।

(ख) शिक्षक वा कर्मचारीको मृत्यु भएको समयमा निज सगोलमा रहेको हुनुपर्नेछ ।

- (३) विधुर पति वा विधवा पत्नी नभएमा वा पति वा पत्नीको मृत्युअघि निजबाट भिन्न भइसकेको भएमा वा विधुर पति वा विधवा पत्नीको पुनः विवाह हुनुभन्दा अघिको पतिबाट जन्मेको १६ वर्षभन्दा कम उमेरका सन्तान वा धर्मपुत्र अविवाहिता धर्मपुत्री रहेछन् भने निजहरूको गुजाराको निमित्त प्रत्येकलाई कार्यकारी परिषद्ले मनासिब देखेको अवधिसम्मका लागि दामासाहीले विधुर पति वा विधवा पत्नीले पाउने निवृत्तिभरणको दुईतिहाइमा नबढ्ने गरी पारिवारिक निवृत्तिभरण प्रदान गर्न सक्नेछ ।

- (४) मृतक शिक्षक वा कर्मचारीका विधुर पति वा विधवा पत्नी, सन्तति वा धर्मपुत्र वा धर्मपुत्री रहेछन् र निज शिक्षक वा कर्मचारीको आश्रित आमा, बाबु दुवै वा दुईमध्ये एक रहेछन् भने निजहरूको गुजाराको निमित्त कार्यकारी परिषद्ले मनासिब देखेमा बढीमा १० वर्षको अवधिसम्मका लागि

दामासाहीले विधुर पति वा विधवा पत्नीले पाउने पारिवारिक निवृत्तिभरणको दुईतिहाइमा नबढ्ने गरी मनासिव ठहरिन आएको दरले पारिवारिक निवृत्तिभरण प्रदान गर्न सकिनेछ ।

(५) मृत शिक्षक वा कर्मचारीको विधुर पति वा विधवा पत्नीको हकमा कार्यकारी परिषद्ले औचित्य र आवश्यकता हेरी तोकिएबमोजिम हुनेछ ।

५९. समिति गठन : (१) कुनै शिक्षक वा कर्मचारी विश्वविद्यालयको कामको सिलसिलामा मृत्यु भएमा वा सो कारणबाट निको नहुँदै मृत्यु भएमा निजको विधुर पति वा विधवा पत्नीले पाउने आजीवन पारिवारिक निवृत्तिभरणका सम्बन्धमा सिफारिस गर्न कार्यकारी परिषद्ले समिति गठन गर्न सक्नेछ ।

(२) उपनियम (१) बमोजिमको समितिलाई कुनै शिक्षक वा कर्मचारीको मृत्यु विश्वविद्यालयको कामको सिलसिलामा भएको हो वा होइन भन्ने सम्बन्धमा समेत राय व्यक्त गरी सिफारिस गर्ने अधिकार हुनेछ ।

६०. तलबको उल्लेख : (१) यस परिच्छेदमा जहाँ तलबको उल्लेख भएको छ त्यसले सम्बन्धित शिक्षक वा कर्मचारीको तत्कालको तलब उल्लेख भएको (ग्रेड वृद्धिसमेत) लाई जनाउनेछ ।

(२) यस नियमबमोजिम प्रदान गरिने उपदान र निवृत्तिभरणको रकमको प्रयोजनका लागि आखिरी तलब भन्नाले सम्बन्धित शिक्षक अथवा कर्मचारीले अवकाश प्राप्त गर्ने अवस्थाको पूरा तलबको हिसाब गरिनेछ ।

६१. उपदान तथा निवृत्तिभरण पाउने हकवालाको क्रम र कार्यविधि : (१) उमेरको कारणबाट अनिवार्य अवकाश पाउने शिक्षक वा कर्मचारीले अवकाश लिने मितिभन्दा ६ महिना अगावै कार्यकारी परिषद्द्वारा तोकिएको ढाँचामा प्रपत्र (फाराम) भरी आफू बहाल रहेको विश्वविद्यालयको निकायमार्फत रजिष्ट्रारलाई सम्बोधन गरी विश्वविद्यालयको केन्द्रीय कार्यालयमा पठाउनुपर्नेछ ।

(२) स्वेच्छिक अवकाश प्राप्त गर्ने वा कार्यकारी परिषद्ले अवकाश दिएको वा ६ महिनाभित्र सो प्रपत्र (फाराम) भरी विश्वविद्यालयको निकायमार्फत रजिष्ट्रारलाई सम्बोधन गरी विश्वविद्यालयको केन्द्रीय कार्यालयमा पठाउनुपर्नेछ ।

(३) उपनियम (१) र (२) बमोजिम प्रपत्र (फाराम) भर्न नपाउँदै कुनै शिक्षक वा कर्मचारीको मृत्यु भएमा त्यस्तो मृतक शिक्षक वा कर्मचारीले कसैलाई नइच्छाएको भए निजको परिवारको सदस्यहरूमध्ये देहायको क्रमअनुसार जो जीवित छ उसैले विश्वविद्यालयको केन्द्रीय कार्यालयमा ६ महिनाभित्र प्रपत्र भरी पठाउनुपर्नेछ :

- क) सगोलको पति वा पत्नी,
- ख) सगोलका छोरा वा धर्मपुत्र,
- ग) सगोलका अविवाहिता छोरी वा अविवाहिता धर्मपुत्री,
- घ) सगोलको बाबु, आमा वा छोरापट्टिको नाति,
- ङ) भिन्न बसेको पति वा पत्नी,
- च) भिन्न बसेको छोरा वा धर्मपुत्र,

- छ) भिन्न बसेका अविवाहिता छोरी वा अविवाहिता धर्मपुत्री, बाबु र आमा,
ज) सगोलका बाबुपट्टिको बाजे, बजैँ, दाजु, भाइ, विधवा छोरी, बुहारी र छोरीपट्टिका अविवाहिता नातिनी,
झ) सगोलका अविवाहिता दिदी, बहिनी,
ञ) सगोलका भतिजा, भतिजी, सौतेनी आमा, भिन्न बसेको छोरापट्टिको नाति र अविवाहिता नातिनी,
ट) सगोलका काका, विधवा काकी, भाउजू, भाइबुहारी, नातिनी बुहारी,
ठ) भिन्न बसेका दाजु, भाइ,
ड) विवाहिता दिदी, बहिनी, भिन्न बसेका बाजे, बजैँ, विधवा छोरी, बुहारी नातिनी बुहारी र भतिजा।
- (४) एकै क्रममा एकभन्दा बढी नातेदारहरू तोकिएका भए सो क्रममा तोकिएका सबै नातेदारहरूले बराबर हिसाबमा मृतक शिक्षक वा कर्मचारीको निवृत्तिभरण पाउन सक्नेछन् ।
- (५) उपनियम (१) र (२) बमोजिम प्रपत्र प्राप्त भएपछि विश्वविद्यालयको केन्द्रीय कार्यालयले आवश्यक जाँचबुझ गरी अवकाश प्राप्त गर्ने शिक्षक वा कर्मचारीको निवृत्तिभरण अधिकार पत्र (पेन्सन पेमेन्ट अर्डर) वा उपदान प्रदान गर्न आवश्यक कारवाही गर्नुपर्नेछ ।
- ६२. उपदान वा निवृत्तिभरण रोक्का :** बुझबुझारथ गर्नुपर्ने शिक्षक तथा कर्मचारीले त्यसरी बुझबुझारथ नगरेमा वा बुझनुपर्ने नबुझेमा वा बुझाउनुपर्ने नबुझाएमा निजले पाउने उपदान तथा निवृत्तिभरण रजिष्ट्रारको निर्णयबाट रोक्का गर्न वा नदिन सकिनेछ ।
- ६३. उपदान वा निवृत्तिभरण पाउने :** (१) यस नियमावलीमा अन्यत्र जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि देहायका शिक्षक वा कर्मचारीले निवृत्तिभरण पाउनेछन् :
- (क) उपदान तथा निवृत्तिभरण भुक्तानीको लागि सेवा अवधि गणना गर्दा नियम ५२ बमोजिम गणना गरिनेछ,
- * (ख) अन्य विश्वविद्यालय वा सरकारी लगानीमा सञ्चालित शिक्षण संस्था तथा प्रतिष्ठानबाट निवृत्तिभरण प्राप्त गरिरहेको शिक्षक, कर्मचारीको हकमा यस विश्वविद्यालयबाट निवृत्तिभरण दिइने छैन । तर उपदान प्रदान गर्न भने यो नियमले बाधा पुऱ्याएको मानिने छैन,
- (ग) विश्वविद्यालय सेवा आयोग वा सभाबाट निर्णय भई नियुक्त भएमा स्थायी शिक्षक वा कर्मचारीले यस नियमबमोजिम उपदान तथा निवृत्तिभरण पाउनेछन् तर करार सेवा वा अस्थायी वा अन्य यस्तै प्रकारका सेवाका शिक्षक तथा कर्मचारीले उपदान वा निवृत्तिभरण पाउने छैनन्,
- (घ) विश्वविद्यालयको स्थायी सेवामा कार्यरत रही यो नियम लागु हुनुभन्दा अगाडि राजीनामा दिई वा मृत्यु भई विश्वविद्यालय सेवाबाट अलग भएका शिक्षक/कर्मचारीहरूलाई पनि यसै नियमअनुसार उपदान तथा निवृत्तिभरण प्रदान गरिनेछ ।
- (२) उपदान वा निवृत्तिभरणसम्बन्धी अन्य व्यवस्था कार्यप्रणाली, सम्बन्धित फारामहरूको ढाँचा कार्यकारी परिषद्ले तोकेबमोजिम हुनेछ ।

* शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली (दोस्रो संशोधन) २०७१ द्वारा संशोधित

परिच्छेद ९

शिक्षक, कर्मचारीको सञ्चयकोष र सापटी

६४. कर्मचारी सञ्चयकोष : (१) विश्वविद्यालयमा पूरा समय काम गर्ने प्रत्येक पदाधिकारी, स्थायी शिक्षक वा कर्मचारी सञ्चयकोषको सदस्य हुनेछन् । त्यस्ता सदस्यले पाउने मासिक तलबाट १० प्रतिशतको दरले महिनैपिच्छे रकम कटाइनेछ, र त्यति नै रकम विश्वविद्यालयले थप गर्नेछ । यसरी जम्मा हुने रकम सदस्यको नाममा सञ्चयकोषमा जम्मा गरिनेछ ।
- (२) त्रिविवाट यस सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालयमा ऐनको दफा ३(२) बमोजिम समायोजन भएका आङ्गिक क्याम्पसका शिक्षक, कर्मचारीहरूले यस विश्वविद्यालय सेवामा प्रवेश गर्नुभन्दा अघिल्लो दिनसम्मको सञ्चयकोष, उपदान, निवृत्तिभरण र विदालगायतका अन्य सुविधा त्रिविवाट रुजु गरी लिई आउनुपर्नेछ ।
- (३) त्रिविवाट यस सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालयमा समायोजन भएका सम्बन्धन प्राप्त क्याम्पसका शिक्षक, कर्मचारीहरूको यस विश्वविद्यालय सेवामा प्रवेश गर्नुभन्दा अघिल्लो दिन सम्मको सञ्चयकोष, उपदान, निवृत्तिभरण, विदालगायतका अन्य सुविधाहरू ऐनको दफा ३(२) बमोजिम समायोजन भएको सम्बन्धित क्याम्पसबाट रुजु गरी लिई आउनुपर्ने छ । यसरी रुजु गर्दा सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय ऐन २०६७ सँग नवाभिने गरी गर्नुपर्नेछ ।
- (४) शिक्षक तथा कर्मचारी विश्वविद्यालय सेवामा आएको मितिदेखि मात्र निजहरूलाई विश्वविद्यालय सञ्चय कोषको सुविधा दिइनेछ ।
- (५) यस नियममावलीमा व्यवस्था गरिएबमोजिमको सञ्चयकोष कट्टीसम्बन्धी सुविधा विश्वविद्यालयमा स्थायी सेवा गरी आएका शिक्षक वा कर्मचारीहरूले मात्र उपभोग गर्न पाउनेछन् ।
६५. सापटी तथा पेस्की : शिक्षक तथा कर्मचारीहरूलाई दिइने पेस्की तथा सापटी कार्यकारी परिषद्ले तोकेबमोजिम हुनेछ ।

* शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली (दोस्रो संशोधन) २०७१ द्वारा संशोधित

परिच्छेद १०

शिक्षक, कर्मचारीको आचरण

६६. विश्वविद्यालयका शिक्षक, कर्मचारीको आचरण : (१) विश्वविद्यालयका शिक्षक, कर्मचारीले विश्वविद्यालय र यसअर्न्तर्गतका निकायहरूमा सेवामा बहाल रहँदा वा कार्यरत रहँदा देहायबमोजिमको आचरणहरूको पालना गर्नुपर्नेछ :
- (क) शिक्षक वा कर्मचारीले कार्यसम्पादनको सिलसिलामा प्राप्त जानकारी र सूचनाको गोप्यता भङ्ग गर्न नहुने,
 - (ख) तोकिएको समयको नियमितताको पालना गरी रुजु हाजिर रहनुपर्ने,
 - (ग) आफ्नो स्वार्थ रहेको विषयमा आफैँले निर्णय गर्न नहुने,
 - (घ) प्राज्ञिक बहस, नेपाल प्राध्यापक सङ्घ, कर्मचारी सङ्घ जस्ता पेसागत सङ्गठन र सामाजिक संस्थाहरूमा उम्मेदवार हुने र भाग लिनेबाहेक राजनीतिक दलको सदस्य भई राजनीतिक निर्वाचनमा उम्मेदवार बन्न नपाइने,
 - (ङ) यदि उम्मेदवार बन्नुपर्ने भएमा कार्यकारी परिषद्ले अन्यथा निर्णय गरेबाहेक १५ दिन अगावै विश्वविद्यालय सेवाबाट राजीनामा दिनुपर्ने,
 - (च) आफू कार्यरत रहेको निकाय वा कार्यालयबाहेक कार्यकारी परिषद्ले तोकेको पदाधिकारीको स्वीकृतिविना अन्य निकायमा पूरा वा आंशिक समयका लागि काम गर्न नहुने,
 - (छ) आफ्नो नाता पर्ने कुनै शिक्षक वा कर्मचारी वा व्यक्तिको विषयमा आफूले निर्णय गर्न नहुने,
 - (ज) खण्ड (छ) को प्रयोजनका लागि नाता पर्ने कुनै शिक्षक, कर्मचारी वा व्यक्ति भन्नाले पति/पत्नी, आफ्ना छोराछोरी, बुहारी वा ज्वाइँ, सहोदर दाजुभाइ र निजहरूका पत्नी, आमाबाबु सम्भन्धुपर्छ,
 - (झ) शिक्षक तथा कर्मचारीले कुनै परामर्श वा अनुसन्धानसम्बन्धी प्रतिष्ठान खोल्न वा सञ्चालन गर्न नपाइने,
 - (ञ) अख्तियारवालाको स्वीकृतिबेगर शिक्षक वा कर्मचारीले कुनै संस्था वा ठाउँबाट प्राप्त छात्रवृत्ति स्वीकार गर्न नपाइने,
 - (ट) शिक्षक तथा कर्मचारीले विश्वविद्यालय भित्र वा बाहिर आफ्नो बौद्धिक तथा प्राज्ञिक प्रतिष्ठा कायम रहने गरी आफ्नो आचरण तथा नैतिकता स्वच्छ र पवित्र राख्नुपर्ने,
 - (ठ) नियम (झ) मा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि अनुसन्धान, परामर्श, प्राज्ञिक तथा व्यावसायिक प्रकृतिको सेवा वा काम गर्न यस नियमले बाधा पुऱ्याएको मानिने छैन र सोसम्बन्धी अन्य व्यवस्था कार्यव्यवस्था प्रणालीले तोकेअनुसार हुने,
 - (ड) शिक्षक तथा कर्मचारीले विश्वविद्यालयको कुनै सम्पत्तिको हानिनोक्सानी गर्नु गराउनु नहुने,
 - (ढ) विद्यार्थीहरूलाई शैक्षिक, प्राज्ञिक तथा अनुसन्धानसम्बन्धी सल्लाह दिनु, विश्वविद्यालयमा आइपरेका समस्या समाधानमा विश्वविद्यालयलाई सहयोग गर्नु, मर्यादित र प्रतिष्ठित राख्नु तथा राख्न सहयोग गर्नु र विश्वविद्यालयको उद्देश्य प्राप्तिको लागि प्राज्ञिक उन्नयनमा तल्लीन रहनुपर्ने,

- (ण) शिक्षक तथा कर्मचारीहरूले विश्वविद्यालयसँग सम्बन्धित ऐन, नियम, विनियम, निर्देशिका, कार्यव्यवस्थापन प्रणाली र तोकिएबमोजिमका निर्देशनहरूको पालना गर्नुने,
- (त) शिक्षक तथा कर्मचारीले अनुचित कार्य र भ्रष्टाचार र भ्रष्टाचारजन्य कार्य गर्नु गराउनु र त्यसमा संलग्न हुन नहुने,
- (थ) आफूमुनिका पदाधिकारी, शिक्षक र कर्मचारीप्रति उचित व्यवहार गर्नुपर्ने,
- (द) पदाधिकारी, शिक्षक र कर्मचारीले आफूभन्दा माथिका सबै पदाधिकारी, शिक्षक र कर्मचारीहरूप्रति उचित आदर देखाउनुपर्ने,
- (ध) कुनै पदाधिकारी, शिक्षक वा कर्मचारीले आफ्नो सेवासम्बन्धी कुरामा आफ्नो स्वार्थपूर्तिको लागि दूषित मनसायले कुनै कार्य गर्न नहुने,
- (न) कुनै पदाधिकारी, शिक्षक र कर्मचारीले व्यावसायिक प्रकृतिको कामकाज गर्दा विश्वविद्यालय, प्रचलित नेपाल कानून र मान्यताप्राप्त राष्ट्रिय वा अन्तर्राष्ट्रिय संस्थाबाट तोकिएको वा प्रतिपादित व्यवसायिक नैतिकता र आचारसंहिताको पालना गर्ने र गराउनुपर्ने,
- (प) पदाधिकारी, शिक्षक वा कर्मचारीमाथि प्रभाव पार्न वा प्रभाव पार्ने प्रयत्न गर्न गराउन नहुने,
- (फ) शिक्षकहरूले तोकिएको कक्षा लिने, सुपरिवेक्षण गर्ने र अन्य प्राज्ञिक कार्य गर्नुपर्ने र कर्मचारीहरूले कार्य विवरणअनुसारको कार्य गर्नुपर्ने,
- (ब) अपराध वा अपराधजन्य कार्यको प्रश्रय हुने गरी तालाबन्दी गर्नु, शारीरिक वा मानसिक कष्ट हुने गरी दबाव दिनु वा सो गर्ने उद्देश्यले अरूलाई उक्साउनु वा उक्साउन लगाउनसमेत नहुने ।

परिच्छेद ११

विभागीय कारबाही, सजाय र पुनरावेदनसम्बन्धी व्यवस्था

६७. सजाय : उचित र पर्याप्त आधार र कारण भएमा विश्वविद्यालयका शिक्षक तथा कर्मचारीहरूलाई तोकिएको अख्तियारवालाले देहायबमोजिमको सजाय गर्न सक्नेछ :

(क) सामान्य सजाय

१. नसिहत दिने,
२. बढीमा २ ग्रेडवृद्धि रोक्का गर्ने,
३. बढीमा २ वर्ष सम्मका लागि बढुवा रोक्का गर्ने ।

(ख) विशेष सजाय

१. भविष्यमा विश्वविद्यालय सेवाका लागि अयोग्य नठहरिने गरी विश्वविद्यालय सेवाबाट हटाउने वा बरखास्त गर्ने,
२. भविष्यमा विश्वविद्यालयको सेवाका लागि अयोग्य ठहरिने गरी सेवाबाट हटाउने वा बरखास्त गर्ने।

६८. नसिहत, ग्रेडवृद्धि वा बढुवा रोक्का : सजाय दिन पाउने अख्तियारवालाले देहायको कुनै अवस्थामा शिक्षक तथा कर्मचारीलाई नियम ६७ (क) बमोजिम नसिहत दिन वा निजको ग्रेडवृद्धि वा बढुवा रोक्का गर्न सक्नेछ :

- (क) काम सन्तोषजनक नभएमा,
- (ख) सरुवा भएको विश्वविद्यालयको सङ्गठन वा निकायमा म्यादभित्र हाजिर नभएमा,
- (ग) आफू कार्यरत रहेको विश्वविद्यालयको सङ्गठन वा निकायमा पूर्वस्वीकृति नलिई बराबर अनुपस्थित रहेमा,
- (घ) अनुशासनहीन काम गरेमा,
- (ङ) आचरणसम्बन्धी नियम उल्लङ्घन गरेमा,
- (च) यस नियमावलीबमोजिम बुझबुझारथ नगरेमा,
- (छ) तोकिएबमोजिमको कार्य नगरेमा ।

६९. सेवाबाट हटाउने वा बरखास्त गर्ने : (१) देहायको अवस्थामा सजाय गर्न पाउने अख्तियारवालाले शिक्षक तथा कर्मचारीलाई विश्वविद्यालय सेवाको लागि भविष्यमा अयोग्य नठहरिने गरी विश्वविद्यालय सेवाबाट हटाउन वा बरखास्त गर्न सक्नेछ :

- (क) आफ्नो कर्तव्य पालनमा लापवाही गरेमा,
- (ख) कार्यक्षमताको अभाव भएमा,
- (ग) मानसिक सन्तुलन गुमाई जिम्मेवारीअनुसार कर्तव्य पूरा गर्न नसक्ने भएमा,
- (घ) यस नियम ६८ बमोजिम सजाय पाइसकेपछि पनि पटकपटक सोही कार्य दोहोर्‍याएमा,
- (ङ) विश्वविद्यालयबाहेक अन्य निकायमा पूर्वस्वीकृतिविना काम गरेमा ।

द्रष्टव्यः यो नियम लागु हुनुभन्दा अघि विश्वविद्यालयको पूर्वस्वीकृति बेगर अन्यत्र पूरा समय वा आंशिक रूपमा कार्यरत शिक्षक तथा कर्मचारीहरूले यो नियम लागु भएको ९० दिनभित्र विश्वविद्यालयको स्वीकृति लिनुपर्नेछ, अन्यथा यसै नियमअनुसार कारबाही गर्न सकिनेछ ।

- (च) आचरणका नियमहरू बारम्बार उल्लङ्घन गरेमा वा पालना नगरेमा,
- (छ) लगातार ९० दिनसम्म बिनासूचना आफू कार्यरत निकाय वा कार्यालयमा अनुपस्थित रहेमा,
- (ज) विश्वविद्यालय सेवाको प्रयोजनका लागि पेस गरेको शैक्षिक प्रमाणपत्र तथा उपाधिहरू नक्कली ठहरिएमा ।

(२) देहायको अवस्थामा सजाय गर्न पाउने अख्तियारवालाले शिक्षक तथा कर्मचारीलाई विश्वविद्यालय सेवाका लागि भविष्यमा अयोग्य ठहरिने गरी विश्वविद्यालय सेवाबाट हटाउन वा बरखास्त गर्न सक्नेछ :

- (क) भ्रष्टाचारसम्बन्धी कसुरमा अदालतबाट सजाय पाएमा,
- (ख) नैतिक पतन देखिने फौजदारी अभियोगमा अदालतबाट सजाय पाएमा ।

७०. विभागीय कारबाही र सजायसम्बन्धी विशेष व्यवस्था : (१) यस नियमावलीमा अन्यत्र जेसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोग ऐन नियमबमोजिम सो आयोगबाट र प्रचलित कानूनबमोजिम सम्बन्धित निकायबाट विश्वविद्यालयका कुनै शिक्षक वा कर्मचारीलाई विभागीय कारबाही गर्न लेखी आएमा आवश्यक प्रक्रिया पुऱ्याई सोबमोजिम विभागीय कारबाही र सजाय गरिनेछ ।

- (२) यस नियमावलीमा अन्यत्र जेसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि नियम ३७ (२) विपरीत बिदा नलिई आफ्नो कार्यालयमा अनुपस्थित हुने शिक्षक र कर्मचारीलाई गयल र तलब कट्टी गर्न सकिनेछ । यसरी गयल भएको अवधि सेवामा गणना गरिने छैन ।
- (३) यस नियमावलीमा अन्यत्र जेसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि बिदा स्वीकृत नगराई लगातार ९० दिनभन्दा बढी अवधि अनुपस्थित हुने शिक्षक, कर्मचारीलाई गयल कट्टी गरी हाजिर गराइने छैन ।
- (४) उपनियम (३) बमोजिमको अवस्थामा विद्यमान हुँदाहुँदै सो नियमविपरीत हाजिर गराएमा त्यसरी हाजिर गराउने अख्तियारवालालाई नियम ६८ बमोजिम विभागीय कारबाही हुनेछ ।
- (५) हाजिर गराएको शिक्षक, कर्मचारीले खाएको तलब, भत्तासमेत त्यसरी हाजिर गराउने अख्तियारवालाको तलबभत्ताबाट असुलउपर गरिनेछ ।

७१. तलब कट्टी : विश्वविद्यालयका शिक्षक वा कर्मचारीले जानाजानी वा लापरवाही गरी वा प्रचलित कानूनविपरीत कार्य गर्नाले विश्वविद्यालयलाई हानिनोक्सानी भएमा सो सम्पूर्ण वा आंशिक हानिनोक्सानी निजको सञ्चयकोषबाहेकको तलबबाट कट्टा गरी असुल गरिनेछ ।

७२. निलम्बन : (१) देहायको अवस्था विद्यमान भएमा सजाय गर्न पाउने अख्तियारवालाले सम्बन्धित शिक्षक वा कर्मचारीलाई निलम्बनमा राखी कारबाही गर्नेछ :

- (क) निलम्बन नगर्दा विश्वविद्यालयलाई हानिनोक्सानी हुने सम्भावना देखिएमा वा कारबाहीमा बाधा पर्ने भएमा,

(ख) निलम्बन नगर्दा निजउपर लागेको अभियोगमा भुट्टा सबुत सङ्कलन गर्न सक्ने वा आफ्नो विरुद्ध सबुत प्रमाण लोप गर्न सक्ने सम्भावना भएमा ।

(२) निलम्बनमा रहेको शिक्षक वा कर्मचारी दोषमुक्त हुने गरी वा कुनै सजाय पाउने गरी अख्तियारवालाबाट निर्णय भएपश्चात् निजको निलम्बन समाप्त हुनेछ ।

७३. सजायसम्बन्धी कार्यविधि : (१) यस नियमावलीको नियम १६ बमोजिम सफाइको सबुत दिने उचित मौका नदिई सेवाबाट हटाउने वा बरखास्त गर्न सकिने अवस्थामा बाहेक शिक्षक वा कर्मचारीलाई यस परिच्छेदबमोजिम सजाय गर्दा सजायको आदेश दिनुभन्दा अगाडि सजाय गर्न पाउने अख्तियारले अनिवार्य रूपले सफाइको सबुत पेस गर्ने मौका दिनुपर्नेछ ।

(२) उपनियम (१) बमोजिमको सफाइको सबुत पेस गर्ने सूचना दिँदा शिक्षक वा कर्मचारीमाथि लगाइएको आरोप स्पष्ट रूपले किटान गरिएको हुनुपर्नेछ ।

(३) शिक्षक, कर्मचारीमाथि लगाइएको प्रत्येक आरोप यस परिच्छेदको कुन नियमअन्तर्गत के विषय र कारणमा आधारित छ सोसमेत स्पष्ट खुलाउनुपर्दछ ।

(४) उपनियम (३) बमोजिमको सूचना शिक्षक वा कर्मचारीले प्राप्त गरेपछि सो सूचनामा तोकिएको म्यादभित्र सो आरोपको सम्बन्धमा निजले सफाइ पेस गर्न सक्नेछ ।

(५) आरोप लागेका शिक्षक वा कर्मचारीको सफाइ प्राप्त भएपछि सो सम्बन्धमा अख्तियारवालाले आवश्यक ठानेमा स्वयं वा अन्य कुनै व्यक्ति वा समितिद्वारा जाँचबुझ गराउन सक्नेछ ।

(६) उपनियम (५) बमोजिमका अन्य व्यक्ति वा समितिले जाँचबुझ गरेको प्रतिवेदनमा कारणसहितको आफ्नो ठहर तथा यथार्थ विवरण सबुत प्रमाणसहित अख्तियारवालासमक्ष पेस गर्नुपर्नेछ ।

(७) उपनियम (५) बमोजिम अन्य व्यक्ति वा समितिबाट जाँचबुझ गराएको भए जाँचबुझ गर्नेको प्रतिवेदनमा आफ्नो ठोस रायसहित र अख्तियारवाला आफैले जाँचबुझ गरेमा आफ्नो रायसुझावसहित सजाय गर्ने अधिकारी समक्ष पेस गर्नुपर्नेछ ।

(८) उपनियम (७) बमोजिम प्रतिवेदन प्राप्त भएपछि सजाय गर्ने अख्तियारवालाले प्रस्तावित सजाय किन नगर्ने भनी उचित म्याद दिई प्रस्तावित सजाय पाउने शिक्षक वा कर्मचारीसँग स्पष्टीकरण माग गर्नुपर्नेछ ।

७४. सेवा आयोगसँग परामर्श : यस परिच्छेदबमोजिम कुनै शिक्षक वा कर्मचारीलाई विशेष सजाय गर्नुपर्ने भई नियम ७३ बमोजिमको कार्यविधि पूरा गरी अन्तिमपटक स्पष्टीकरण लिइसकेपछि, भविष्यमा विश्वविद्यालय सेवाको निमित्त अयोग्य ठहरिने गरी सेवाबाट हटाउने गरी सजाय गर्नुभन्दा अगाडि कारवाहीका सम्बन्धमा उठेका सम्पूर्ण कागजात सेवा आयोगमा पठाई सोबारे सेवा आयोगबाट परामर्श लिनुपर्नेछ ।

७५. सजाय गर्ने अधिकारी : ऐन वा यस नियममा स्पष्ट लेखिएकोमा बाहेक सामान्यतया यस परिच्छेदबमोजिमको सजाय गर्ने अधिकार कार्यकारी परिषद् वा कार्यकारी परिषद्ले तोकेको पदाधिकारी, व्यक्ति वा समितिलाई हुनेछ ।

७६. **पुनरावेदन** : कुनै शिक्षक वा कर्मचारीलाई यस परिच्छेदअन्तर्गत निजले पाएको सजायमा चित्त नबुझेमा आफ्नो पूर्ण विवरण र सजायको आदेशको सूचनाको प्रतिलिपिसमेत साथै राखी सजायको सूचना पाएको मितिले बाटोको म्यादबाहेक ३५ दिनभित्र सो सजायको आदेशउपर विश्वविद्यालय पुनरावेदन आयोगमा पुनरावेदन दिन सकिनेछ ।
७७. **सेवामा पुनः कायम र तलबभत्ता** : शिक्षक वा कर्मचारीलाई यस परिच्छेदबमोजिम विश्वविद्यालय सेवाबाट हटाउने वा बरखास्त गर्ने आदेश बढेर भई निज पुनः सेवामा कायम भएमा विश्वविद्यालय सेवाबाट हटाइएको वा बरखास्त गरिएको मितिदेखि पुनः कायम भएको मितिसम्मको पूरा तलबभत्ता ग्रेडवृद्धि भए त्यस्तो वृद्धिसमेत निजले पाउनेछ ।
७८. **नोकरी थाप्न कर नलाग्ने** : विश्वविद्यालय सेवाबाट हटाउने वा बरखास्त गर्ने गरी भएको निर्णयमा चित्त नबुझी सम्बन्धित शिक्षक, कर्मचारीले विश्वविद्यालय पुनरावेदन आयोगसमक्ष पुनरावेदन दिएकोमा सो पुनरावेदन उपर सुनुवाइ भई पुनर्बहाली हुने निर्णय भएमा सो निर्णयको सूचना पाएको मितिले सम्बन्धित शिक्षक वा कर्मचारी ३५ दिनभित्र सम्बन्धित निकायमा हाजिर हुन नआए निजलाई सेवामा बहाल गर्न विश्वविद्यालय बाध्य हुने छैन ।

परिच्छेद १२

विश्वविद्यालय सेवा आयोगको काम, कर्तव्य र अधिकार

७९. **विश्वविद्यालय सेवा आयोगको काम, कर्तव्य र अधिकार** : विश्वविद्यालय सेवा आयोगको काम, कर्तव्य र अधिकार देहाय बमोजिम हुनेछ :
- (क) विश्वविद्यालय सेवामा शिक्षक र कर्मचारीको नियुक्ति तथा बढुवाका लागि सिफारिस गर्ने,
 - (ख) विश्वविद्यालयका शिक्षक तथा कर्मचारीको सेवासर्तसम्बन्धी कानूनको विषयमा आवश्यक परामर्श दिने,
 - (ग) विश्वविद्यालय सेवामा शिक्षक तथा कर्मचारीलाई दिइने विभागीय सजायको विषयमा नियम ७४ बमोजिम आवश्यक परामर्श प्रदान गर्ने,
 - (घ) विश्वविद्यालय सेवामा शिक्षक र कर्मचारीको नियुक्ति तथा बढुवाका लागि परीक्षाको पाठ्यक्रम निर्धारण गर्ने तथा परीक्षा सञ्चालन गर्ने गराउने,
 - ♥(ङ) विश्वविद्यालय सेवामा शिक्षक तथा कर्मचारीको नियुक्ति एवं सिफारिससम्बन्धी विनियमबमोजिम कार्य गर्ने गराउने,
 - (च) विश्वविद्यालयका शिक्षक तथा कर्मचारीहरूको वृत्तिविकास वा क्षमता वा दक्षता वृद्धि गराउने विषयमा विश्वविद्यालयले मागेका सुझावहरूमा आवश्यक अध्ययन गरी उपयुक्त र प्रभावकारी हुने सुझावहरू प्रदान गर्ने,
 - (छ) एउटा विषयको दरबन्दीमा कार्यरत शिक्षकलाई अर्को विषयको दरबन्दीको शिक्षकमा परिवर्तन र एउटा पदमा कार्यरत कर्मचारीलाई समान तहको अर्को पदमा पद परिवर्तनसम्बन्धी विषयमा माग भएबमोजिम सम्बन्धित निकाय वा कार्यालयलाई आवश्यक परामर्श प्रदान गर्ने,

♥ शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली (सातौं संशोधन) २०७८ द्वारा संशोधित

- (ज) सेवा आयोगको कार्यक्षेत्रभित्र पर्ने विषयमा निरीक्षण वा जाँचबुझ गर्ने गराउने,
(झ) विश्वविद्यालयसँग सम्बन्धित कानूनबमोजिम तोकिएका अन्य कार्यहरू गर्ने गराउने ।

परिच्छेद १३

विश्वविद्यालय सेवा आयोगको बैठक र निर्णय

८०. विश्वविद्यालय सेवा आयोगको बैठक र निर्णय : (१) विश्वविद्यालय ऐन र विश्वविद्यालयका प्रचलित नियमहरूबमोजिम सेवा आयोगले गर्नुपर्ने कामहरू सेवा आयोगको बैठकबाट निर्णय भएबमोजिम कार्यान्वयन गरिनेछ।
- (२) सेवा आयोगको बैठकको अध्यक्षता अध्यक्षले गर्नेछन् ।
- (३) सेवा आयोगमा अध्यक्ष र एकजना सदस्यको उपस्थिति नभई बैठक बस्न सक्ने छैन ।
- (४) बहुमतको निर्णय मान्य हुनेछ र मत बराबर भएमा अध्यक्षता गर्ने व्यक्तिले निर्णायक मत दिनेछ ।
- (५) सेवा आयोगको निर्णय आयोगले तोकेको सदस्य वा अधिकृतले प्रमाणित गर्नेछ ।
- (६) सेवा आयोगको निर्णय लिपिबद्ध गरी अभिलेख राखिनेछ । यस प्रयोजनका लागि सेवा आयोगले निर्णय पुस्तिकाको प्रयोग गर्न सक्नेछ ।
- (७) सेवा आयोगको बैठक सञ्चालन र कार्यविधिहरू सेवा आयोगले निर्धारण गरेबमोजिम हुनेछ ।

परिच्छेद १४

विश्वविद्यालय सेवाको परीक्षा सञ्चालन र पाठ्यक्रम निर्धारण

८१. विश्वविद्यालय सेवाको परीक्षा सञ्चालन : (१) विश्वविद्यालय सेवाको पदपूर्तिका लागि आयोगबाट लिइने परीक्षा देहायको कुनै एक वा सोभन्दा बढी तरिका र प्रक्रियाद्वारा गर्न सकिनेछ :
- (क) खुला प्रतियोगितात्मक लिखित परीक्षा,
- (ख) खुला प्रतियोगितात्मक प्रयोगात्मक परीक्षा,
- * (ख_१) विशेष आन्तरिक प्रतियोगिता,
- ♣ (ख_२) ऐनको दफा ३ को उपदफा (२) र यसै नियमावलीको नियम १६ को उपनियम (४) बमोजिम समायोजन भई यस विश्वविद्यालयमा आएका वा समायोजन हुने सबै शिक्षक तथा कर्मचारीहरू र मिति २०६९/६/५ गतेभन्दा अगाडि छनोट भई यस विश्वविद्यालयमा कार्यरत सबै शिक्षक तथा कर्मचारीहरूबिच मात्र एकपटकका लागि विशेष आन्तरिक प्रतियोगिता सञ्चालन गरी स्थायी पदपूर्ति गरिनेछ ।
- ♣ (ख_३) माथि (ख_१) र (ख_२) मा उल्लेख गरिएबमोजिमको विशेष आन्तरिक प्रतियोगिताको हकमा उमेरको हद लाग्ने छैन ।
- ♣ (ख_४) विशेष आन्तरिक प्रतियोगिताको प्रक्रिया सेवा आयोगले तोकेबमोजिम हुनेछ ।
- (ग) छनोट र मूल्याङ्कन,
- (घ) अन्तर्वार्ता र

* शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली (पहिलो संशोधन) २०७० द्वारा थप

(ड) आवश्यकताअनुसार आयोगले तोकेका अन्य तरिका र प्रक्रियाहरूबाट ।

- (२) उपनियम (१) बमोजिमको परीक्षासम्बन्धी मुल्याङ्कन विधि, भाषागत माध्यम र अन्य व्यवस्था र प्रक्रिया सेवा आयोगले तोकेबमोजिम हुनेछ ।
- (३) सेवा आयोगले शिक्षकको हकमा प्राज्ञिक परिषद्बाट र कर्मचारीको हकमा कार्यकारी परिषद्बाट निर्धारण भएको आधारमा परीक्षाका लागि प्राशनिक, परीक्षक, सम्परीक्षक वा विशेषज्ञको व्यवस्था गर्नेछ ।
- (४) सेवा आयोगले सञ्चालन गर्ने परीक्षा हुने मिति, समय, स्थानसमेतको परीक्षा तालिका सार्वजनिक रूपमा प्रकाशन गरिनेछ ।
- (५) उपनियम (४) बमोजिमको परीक्षा सेवा अयोगले कुनै उपयुक्त र पर्याप्त कारणको अभावमा स्थगित गर्न, रद्द गर्न वा संशोधन गर्न सक्ने छैन ।
- (६) सेवा आयोगको कुनै पनि परीक्षा सञ्चालन हुँदाको बखत परीक्षा केन्द्रमा कुनै प्रकारको गडबडी वा अनियमितता वा कुनै बाधाअवरोध खडा भई परीक्षा सञ्चालन हुन नसकेमा सो दिनको परीक्षा वा सोसँग सम्बन्धित विज्ञापनको सम्पूर्ण परीक्षा आंशिक वा पूर्ण रूपले सेवा आयोगले कारण जनाई रद्द गर्न सक्नेछ ।
- (७) परीक्षा सञ्चालनसम्बन्धी अन्य आवश्यक व्यवस्था सेवा आयोगले तोकेबमोजिम हुनेछ ।

८२. शैक्षिक योग्यता र पाठ्यक्रम : (१) यस नियमावलीको निमय ८१ बमोजिमको परीक्षासम्बन्धी पाठ्यक्रम तोक्ने अधिकार सेवा आयोगलाई हुनेछ ।

- (२) सेवा आयोगले उपनियम (१) बमोजिम शिक्षकको पाठ्यक्रम तोक्दा प्राज्ञिक परिषद्सँग र कर्मचारी पदका लागि पाठ्यक्रम निर्धारण गर्दा कार्यकारी परिषद्सँग राय सल्लाह लिनुपर्नेछ ।
- (३) सेवा आयोगले आवश्यकताअनुसार पाठ्यक्रम निर्धारण, संशोधन र समसामयिक सुधारका लागि आवश्यक दक्ष विशेषज्ञको मनोनयन वा समितिको गठन गर्न सक्नेछ ।
- (४) सेवा अयोगले आवश्यकता र औचित्यका आधारमा समय समयमा परीक्षाको पाठ्यक्रम पुनरावलोकन गरी गराई परीक्षा सञ्चालन गर्न सक्नेछ ।
- (४) कुनै उम्मेदवारले कुनै विश्वविद्यालय वा शिक्षण संस्थाबाट प्राप्त गरेको शैक्षिक योग्यता सेवाको पदका लागि सेवा आयोगबाट तोकिएको वा मान्यता दिइएको योग्यतासरह छु छैन भन्ने निर्णय गर्ने अधिकार सेवा अयोगलाई हुनेछ ।

परिच्छेद १५

विश्वविद्यालय सेवा आयोगसँग परामर्शसम्बन्धी कार्यविधि

८३. विश्वविद्यालय सेवासँग परामर्श लिँदा अपनाउनुपर्ने कार्यविधि : (१) विश्वविद्यालयका शिक्षक तथा कर्मचारीको सेवाका सर्तसम्बन्धी नियमका विषयमा आयोगको परामर्श लिँदा रजिष्ट्रारमार्फत लिनुपर्नेछ ।

- (२) रजिष्ट्रारले विश्वविद्यालयको शिक्षक तथा कर्मचारीको सेवासर्तसम्बन्धी कुनै नयाँ नियम बनाउनुपरेमा वा भइरहेको नियममा कुनै संशोधन गर्नुपरेमा तत्सम्बन्धमा पूर्ण विवरणसमेत खुलाई सेवा आयोगमा पठाउनुपर्नेछ ।
- (३) विश्वविद्यालय सेवाको पदमा शिक्षक तथा कर्मचारीको सेवासर्तसम्बन्धी नियमबमोजिम तोकिएको अवधिभन्दा बढी अवधिका लागि नियुक्ति गर्न सम्बन्धित पदाधिकारीले कार्यकारी परिषद्को निर्णयानुसार सेवा आयोगको परामर्श लिनुपर्नेछ ।
- (४) शिक्षक तथा कर्मचारीलाई सेवासर्तसम्बन्धी नियमबमोजिम दिइने विश्वविद्यालयको सेवाका लागि अयोग्य ठहरिने गरी सेवाबाट हटाउने विभागीय सजायको विषयमा सजाय दिने अख्तियारवालाले सेवा आयोगको परामर्श लिँदा नियमबमोजिम गर्नुपर्ने विभागीय कारवाहीको प्रक्रिया पूरा गरी सोको आधारमा ठहर हुनुपर्ने विभागीय सजायसमेत खुलाई सम्बन्धित फाइलसाथ सेवा आयोगमा पठाउनुपर्नेछ ।

८४. विश्वविद्यालय सेवा आयोगले परामर्श दिँदाको अपनाउने कार्यविधि : (१) नियम ८३ को उपनियम (१)

र (२) बमोजिम आयोगको परामर्श माग भइआएमा सेवालार्इ अधिक निपुण, प्रभावकारी र सुदृढ बनाउन सेवाको सर्तसम्बन्धी नियममा आवश्यक विचार र विश्लेषण गरी आयोगले परामर्श दिनेछ ।

- (२) नियम ८३ को (३) बमोजिम परामर्श माग भइआएमा सेवा वा पदको कार्य प्रकृतिसमेतलाई विचार गरी परामर्श दिनेछ ।
- (३) नियम ८३ को उपनियम (४) बमोजिम सेवा आयोगको परामर्श माग भइआएमा सेवा आयोगले आवश्यक ठानेमा सजाय दिने अधिकारीसँग अरू थप सबुत प्रमाणसमेत बुझी परामर्श दिनेछ ।
- (४) नियम ८३ मा तोकिएको अवस्थाबाहेक प्रचलित नियमबमोजिम सेवा आयोगले परामर्श दिनुपर्ने विषयमा सेवा आयोगले आवश्यक प्रक्रिया अपनाई परामर्श दिन सक्नेछ ।

परिच्छेद १६

निरीक्षण

८५. निरीक्षण : (१) विश्वविद्यालय सेवामा नियुक्ति, बढुवा, विभागीय कारवाहीसम्बन्धी सेवा आयोगद्वारा प्रत्यायोजित कामहरू प्रचलित नियमबमोजिम छ, छैन भन्ने विषयमा सेवा आयोगले निरीक्षण, सुपरिवेक्षण र जाँचबुझ गर्न गराउन सक्नेछ ।
- (२) सेवा आयोगले प्रत्यायोजन गरेको अधिकारबमोजिम नियुक्ति वा बढुवा गरेको नपाइएमा नियुक्ति वा बढुवा हुने पदमा निर्धारित प्रक्रिया र सर्त पूरा नगरी कुनै शिक्षक वा कर्मचारी वा व्यक्तिलाई नियुक्ति वा बढुवा गरेको पाइएमा सेवा आयोगले सो नियुक्ति वा बढुवा अनियमित ठहर्‍याउन सक्नेछ ।
- (३) निरीक्षण गर्दा सेवा आयोगको कार्यविधि प्रतिकूल कामकारवाही भएगरेको देखिएमा वा निरीक्षणमा सेवा आयोगलाई कुनै पदाधिकारी, शिक्षक वा कर्मचारीले सहयोग नगरेमा त्यस्तो अनियमित गर्ने वा सहयोग नगर्ने पदाधिकारी, शिक्षक वा कर्मचारीलाई आवश्यक कारवाही गर्न सेवा आयोगले कार्यकारी परिषद्मा सिफारिस गर्न सक्नेछ ।
८६. पुनरावलोकन : (१) सेवा आयोगले नयाँ नियुक्ति वा बढुवाका लागि सिफारिस पठाएकामा सोबमोजिम नियुक्ति वा बढुवापत्र दिनुअगावै कुनै उम्मेदवारको सिफारिस उम्मेदवारले प्रस्तुत गरेका गलत विवरणको कारणबाट फिर्ता लिनुपरेमा सेवा आयोगले कारण उल्लेख गरी सिफारिस रद्द गरी योग्यता क्रमको अर्को सूचना प्रकाशित गर्नेछ ।
- (२) कुनै विशेष कारण वा परिस्थिति परी सेवा आयोगले प्रदान गरेका परामर्श सिफारिसबमोजिम कारवाही गर्न बाधा पर्न आएमा सो कारण खोली कार्यकारी परिषद्ले पुनः विचारार्थ सेवा आयोगमा लेखी पठाएमा सेवा आयोगले सोमा विचार गर्दा पूर्वपरामर्श वा सिफारिसलाई संशोधन गर्न पर्याप्त आधार देखेमा/पाएमा सेवा आयोगले पूर्वपरामर्श वा सिफारिसमा संशोधन गर्न सक्नेछ ।

परिच्छेद १७

अधिकार प्रत्यायोजन

८७. अधिकार प्रत्यायोजन : (१) सेवा आयोगले आफ्ना अधिकारहरूमध्ये केही वा सबै अधिकार विश्वविद्यालयको कुनै समिति वा आफैँले समिति गठन गरी प्रत्यायोजन गर्न सक्नेछ ।
- (२) उपनियम (१) मा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि देहायका विषयमा सेवा आयोगले आफ्नो काम, कर्तव्य र अधिकार प्रत्यायोजन गर्न सक्ने छैन :
- (क) विश्वविद्यालयको प्राध्यापक वा सहप्राध्यापक वा सो सरहको शिक्षक पदमा नियुक्ति तथा बढुवाका लागि सिफारिस गर्ने विषयमा,
- (ख) विश्वविद्यालयको सहप्रशासक वा सो सरहको प्रशासनिक तथा अन्य पदमा नियुक्ति तथा बढुवाका लागि सिफारिस गर्ने विषयमा,

- (ग) विश्वविद्यालयको शिक्षक तथा कर्मचारीको सेवाको सर्तसम्बन्धी नियम संशोधन गर्ने विषयको परामर्श दिने विषयमा,
- (घ) विश्वविद्यालयको शिक्षक तथा अधिकृत स्तरका कर्मचारीलाई दिइने विभागीय कारवाहीअन्तर्गत दिइने विशेष सजायको सम्बन्धमा परामर्श दिने विषयमा,
- (ङ) कुनै पनि शिक्षक वा कर्मचारी आफ्नो पदमा बहाल रहेसम्म निजहरूलाई मर्का पर्ने गरी सेवासर्तहरू थपघट गर्ने विषयमा,
- (च) करार सेवामा प्राध्यापक वा सहप्राध्यापक र सहप्रशासक वा सो सरहको पदमा नियुक्ति गर्ने, सोभन्दा मुनिको कुनै पनि पदमा एकै पटक वा पटक पटक गरी ३ (तीन) वर्षभन्दा बढी अवधिका लागि नियुक्तिका सम्बन्धमा सहमति दिने विषयमा,
- (छ) शिक्षक पदबाट प्रशासनिक पदमा र प्रशासनिक वा अन्य पदबाट शिक्षक पदमा सेवा परिवर्तन गर्ने गराउने विषयमा ।
- (३) सेवा आयोगले अधिकार प्रत्यायोजन गर्दा सो अधिकार प्रत्यायोजनसम्बन्धी सिद्धान्त प्रक्रिया वा कार्यविधि तोक्नेछ ।
- (४) उपनियम (१) बमोजिम उजुरी परेमा सेवा आयोगले सो सम्बन्धमा जाँचबुझ गरी ६० दिनभित्र विश्वविद्यालयका निकायहरूलाई आवश्यक आदेश दिनेछ ।

८८. उजुरी : (१) यस नियमावलीबमोजिम सेवा आयोगद्वारा प्रत्यायोजन गरेको अधिकार प्रयोग गरी गरेका काम कारवाहीमा चित्त नबुझ्ने शिक्षक, कर्मचारी वा व्यक्तिले सो काम कारवाही भएगरेको मितिले पैंतिस दिनभित्र सेवा आयोग वा सेवा आयोगले तोकेको अधिकारीसमक्ष उजुरी गर्न सक्नेछ ।

- (२) उपनियम (१) मा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि त्यस्तो कामकारवाहीउपर पुनरावेदन लाग्ने छुट्टै व्यवस्था भएमा सोहीबमोजिम पुनरावेदन लाग्नेछ ।

८९. सेवा आयोगको कार्यालय : (१) सेवा आयोगका कामहरू सुचारु रूपले सञ्चालन गर्न गराउन सेवा आयोगको एक छुट्टै कार्यालय रहनेछ ।

- (२) उपनियम (१) बमोजिमको कार्यालय सेवा आयोगको अध्यक्ष वा निजले तोकेको सदस्य अधिकृत कर्मचारीको प्रत्यक्ष रेखदेख वा नियन्त्रणमा रहनेछ ।
- (३) सेवा आयोगको कार्यालयमा रहने शिक्षक वा कर्मचारीको दरबन्दी सेवा आयोगको सिफारिसमा कार्यकारी परिषद्ले निर्धारण गरेबमोजिम हुनेछ ।
- (४) सेवा आयोगको कार्यालयमा कार्यरत शिक्षक वा कर्मचारीको विदा, काज, सरुवा र अन्य व्यवस्था सेवा आयोगको अध्यक्षको सिफारिस वा सहमतिविना कार्यकारी परिषद् केन्द्रीय कार्यालय वा कुनै पदाधिकारीले गर्न सक्ने छैन ।

९०. आचार संहिता : (१) सेवा आयोगको कार्यालयमा कार्यरत रहेका शिक्षक/कर्मचारीका लागि परिच्छेद १० बमोजिम आचारसंहिता लागु हुनेछ ।

- (२) यस्ता शिक्षक वा कर्मचारीका लागि विशेष आचारसंहितासमेत सेवा आयोगले तोक्न सक्नेछ ।

(३) यसरी तोकिएका विशेष आचारसंहिता विश्वविद्यालयका शिक्षक तथा कर्मचारी सेवासर्तसम्बन्धी नियममा समावेश भएसरह हुनेछन् ।

९१. कार्यविधि निर्धारण : सेवा आयोगले आफ्नो कार्यालयको कामकारवाहीसम्बन्धी आन्तरिक कार्यविधि र कार्यप्रणाली निर्धारण गर्न सक्नेछ ।

९२. गोप्यता : (१) सेवा आयोगले लिने परीक्षाहरूसँग सम्बन्धित सबै प्रकारका अभिलेखहरू गोप्य रहनेछन् ।

(२) सेवा आयोगका अध्यक्ष तथा सदस्य एवं सेवा आयोगका कामसँग सम्बन्धित रहेका प्राशिनक, परीक्षक, विशेषज्ञ, दक्ष शिक्षक तथा कर्मचारीले बहाल रहेका वा अवकाशपछिको अवस्थामा समेत सेवा आयोगसम्बन्धी कामको गोप्यता कायम राख्नुपर्नेछ ।

९३. विशेष व्यवस्था : यो नियम लागु हुनुभन्दा पहिले भएका कामकारवाहीहरूमध्ये टुङ्गो नलागिसकेका कामकारवाहीहरू तत्कालीन नियमबमोजिम नै वा आयोगले निर्णय गरी टुङ्गो लगाउन सक्नेछ ।

(२) यस विश्वविद्यालय ऐनबमोजिम त्रिभुवन विश्वविद्यालयबाट समावेश हुन आएका आंगिक तथा सम्बन्धन प्राप्त क्याम्पसहरूसँग सम्बन्धित निकायहरूमा कार्यरत शिक्षक, कर्मचारीको समायोजन प्रक्रिया यस विश्वविद्यालय ऐनको अधीनमा रही कार्यकारी परिषद्ले तोकेबमोजिम हुनेछ ।

परिच्छेद १८

पुनरावेदन आयोग

९४. आयोगको गठन : (१) विश्वविद्यालयको सांगठनिक संरचनाअन्तर्गत तीन सदस्यीय एक विश्वविद्यालय पुनरावेदन आयोग गठन हुनेछ ।

(२) उपनियम (१) बमोजिमको पुनरावेदनको आयोगमा एकजना अध्यक्ष र दुई जना सदस्य रहनेछन् ।

(३) पुनरावेदन आयोगको अध्यक्ष र सदस्यहरूको योग्यता र नियुक्तिसम्बन्धी व्यवस्था देहायबमोजिम हुनेछ।

♥(क) कानुनमा स्नातक वा सोभन्दा माथिल्लो तह उत्तीर्ण गरी कानुनी वा न्यायिक क्षेत्रमा कम्तीमा २० वर्षको अनुभव प्राप्त गरेका व्यक्तिलाई कार्यकारी परिषद्को सिफारिसमा विश्वविद्यालय सभाले पुनरावेदन आयोगको अध्यक्ष पदमा नियुक्त गर्नेछ ।

♥(ख) कानुन वा जनप्रशासन वा व्यवस्थापन विषयका सेवा निवृत्त कम्तीमा सहप्राध्यापक वा सहप्रशासकमध्येबाट कार्यकारी परिषद्को सिफारिसमा विश्वविद्यालय सभाले दुई जना सदस्यको नियुक्ति गर्नेछ।

♦(ग) उपनियम (क) र (ख) मा जसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि विश्वविद्यालय सभाको बैठक नबसेको अवस्थामा अध्यक्ष र सदस्यहरूको नियुक्ति गर्नुपर्ने भएमा वा निजहरूको पद रिक्त भएमा सो रिक्त पदमा कार्यकारी परिषद्बाट यस नियमावलीबमोजिम योग्यता पुगेका व्यक्तिलाई

♥ शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली (सातौं संशोधन) २०७८ द्वारा संशोधित

♦ शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली (दोस्रो संशोधन) २०७१ द्वारा संशोधित

अध्यक्ष वा सदस्य नियुक्त गर्न सक्नेछ । सो नियुक्ति लगत्तै बस्ने सभाबाट अनुमोदन गराउनु पर्नेछ ।

(घ) आयोगका अध्यक्ष तथा सदस्यहरू आंशिक समय काम गर्ने पदाधिकारी हुनेछन् ।

(ङ) देहायमध्ये कुनै एक अवस्थामा अध्यक्ष र सदस्यको पद रिक्त भएको मनिनेछ :

(१) कार्यकारी परिषदसमक्ष निजले पेस गरेको राजीनामा स्वीकृत भएमा,

(२) निजको मृत्यु भएमा,

(३) मानसिक असन्तुलन भएको भनी आधिकारिक रूपमा प्रमाणित भएमा,

(३) निजको पदावधि पूरा भएमा,

♥(४) नैतिक पतन देखिने फौजदारी अभियोगमा अदालतले कसुरदार ठहर्‍याई सजाय भएमा,

(५) मनासिब माफिकको कारणविना लगातार ३ पटकभन्दा बढी आयोगको बैठकमा

अनुपस्थिति भएमा,

(६) अन्य देशको स्थायी बसोबासको प्रमाणपत्र लिएमा ।

९५. आयोगको अधिकार र अधिकारको प्रयोग : (१) आयोगले आफूलाई प्राप्त अधिकारको प्रयोग अध्यक्ष र सदस्यले सामूहिक रूपले गर्नेछन् । बहुमतको निर्णय आयोगको निर्णय मानिनेछ ।

(२) उपनियम (१) मा जेसुकै लेखिएको भए तापनि अध्यक्ष र एकजना सदस्यको उपस्थितिमा पुनरावेदन किनारा लगाउन सकिनेछ ।

(३) अध्यक्षबाहेक दुईजना सदस्यहरूको उपस्थितिमा अन्तिम निर्णय दिनेबाहेक अरू कारवाही अधि बढाउन सकिनेछ ।

(४) उपनियम (२) बमोजिम अध्यक्ष र एकजना सदस्यको उपस्थितिमा पेस भएको निवेदन वा पुनरावेदनमा अध्यक्ष र सदस्यका विच राय बाझिन गई निर्णय हुन नसकेमा सो दिन अनुपस्थित भएका सदस्यसमक्ष अर्को दिनको सुनुवाइको मिति तोकी पेस गरिनेछ ।

(५) निवेदन वा पुनरावेदनका सम्बन्धमा उपनियम (१) बमोजिम बहुमतबाट निर्णय हुन नसकेमा अध्यक्षको राय नै आयोगको निर्णय मानिनेछ ।

(६) आयोगको निर्णय अन्तिम हुनेछ ।

९६. आयोगको अधिकार क्षेत्र : ♥(१) आन्तरिक प्रतियोगिताद्वारा नियुक्ति वा बढुवाका लागि सेवा आयोगले गरेको सिफारिसविरुद्ध उजुरी सुन्ने, ऐन तथा नियमअन्तर्गत विश्वविद्यालयका पदाधिकारी, शिक्षक तथा कर्मचारीहरूको सेवासर्तका सम्बन्धमा विश्वविद्यालयले गरेका निर्णयका विरुद्ध र सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली २०६९, बमोजिम विश्वविद्यालयले गरेका निर्णयविरुद्ध पुनरावेदन सुन्ने अधिकार पुनरावेदन आयोगलाई हुनेछ ।

♥(२) आयोगले ३० दिनभित्र सबै प्रकारका उजुरी तथा पुनरावेदनको टुङ्गो लगाउनुपर्नेछ ।

♥(३) उपनियम(२) को म्यादभित्र अन्तिम दुगे लाग्न नसक्ने अवस्था सिर्जना भएमा सोको कारण खुलाई म्यादथपका लागि कार्यकारी परिषद्मा पेस गर्नुपर्नेछ र कार्यकारी परिषद्ले सोबमोजिम म्याद थप्नुपर्नेछ ।

९७. **आयोगको कार्यविधि :** पुनरावेदनका सम्बन्धमा प्रमाण बुझ्ने, मिसिल भिकाउने, तारेख तोक्ने जस्ता कार्यसँग सम्बन्धित कार्यविधि आयोगले निर्धारण गरेबमोजिम हुनेछ ।

९८. **प्रतिरक्षा :** आयोगमा परेको निवेदन वा पुनरावेदनका सम्बन्धमा पक्षले चाहेमा कानून व्यवसायीद्वारा बहस पैरवी र प्रतिरक्षा गराउन सक्नेछ ।

९९. **आयोगका अध्यक्ष तथा सदस्यहरूको पदावधि तथा अन्य सेवासर्तसम्बन्धी सुविधाहरू :** (१) आयोगका अध्यक्ष तथा सदस्यहरूको पदावधि ३ (तीन) वर्षको हुनेछ ।

(२) आयोगका अध्यक्ष तथा सदस्यहरूको पारिश्रमिक, भत्ता तथा अन्य सुविधाहरू कार्यकारी परिषद्ले तोकेबमोजिम हुनेछ ।

१००. **आयोगलाई आवश्यक कर्मचारी तथा अन्य व्यवस्था :** यस नियमावलीबमोजिम आयोगलाई आफ्नो कार्यसम्पादन गर्न आवश्यक पर्ने कर्मचारी र आवश्यक स्रोत, साधन कार्यकारी परिषद्ले उपलब्ध गराउनेछ ।

१०१. **निर्णयको कार्यान्वयन :** आयोगको निर्णयको कार्यान्वयन सेवा आयोगको सम्बन्धमा सेवा आयोगले र अन्यको हकमा कार्यकारी परिषद्ले गर्ने गराउनेछ ।

१०२. **नक्कल :** कुनै पक्षले मिसिल संलग्न कुनै कागजातको नक्कल लिन चाहेमा आयोगले तोकेबमोजिमको कार्यविधि पूरा गरी नक्कल दिनुपर्नेछ ।

परिच्छेद १९

विविध

१०३. **पूर्वसूचना :** (१) स्थायी, शिक्षक वा कर्मचारीले विश्वविद्यालय सेवाबाट राजीनामा दिन चाहेमा निजले १ महिनाको पूर्वसूचना दिनुपर्नेछ ।

(२) उपनियम (१) बमोजिम सूचना नदिएको खण्डमा विश्वविद्यालयले निजसँग १ महिनाको तलब असुल गर्न सक्नेछ ।

(३) माथि नियम (२) मा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि कार्यकारी परिषद्ले उचित ठानेमा उक्त १ महिनाको अवधिलाई घटाउन सक्नेछ ।

१०४. **सुविधा दिने :** (१) विश्वविद्यालयको हितलाई ध्यानमा राखी कुनै पदको दरबन्दी खारेज गर्ने निर्णय भएमा र सो निर्णयको फलस्वरूप कुनै स्थायी शिक्षक वा कर्मचारी विश्वविद्यालय सेवाबाट हट्ने भएमा सो शिक्षक वा कर्मचारीलाई ३ महिनाको पूर्वसूचना वा ३ महिनाको तलब दिनुपर्नेछ ।

(२) उपनियम (१) बमोजिम खारेज भएको पदमा विश्वविद्यालयले यथाशक्य अरू खाली रहेका उपयुक्त पदमा मिलाउन प्रयास गर्नेछ ।

(३) विश्वविद्यालय सेवाअन्तर्गत अविच्छिन्न १० वर्षसम्म अस्थायी वा करार सेवामा काम गरेका तर ४५ (पैंतालिस) वर्ष उमेर नाघेका शिक्षक तथा कर्मचारी कुनै कारणले स्थायी नियुक्त हुन नसकेमा

यो नियम प्रारम्भ भएपछि निजलाई बढीमा १० (दश) महिनाको सुरु स्केलको तलब एकमुष्ट प्रदान गरी सेवाबाट अवकाश दिन सकिनेछ ।

१०५. निरोगिताको प्रमाणपत्र : स्थायी हनुभन्दा पहिले प्रत्येक शिक्षक तथा कर्मचारीले विश्वविद्यालयबाट मान्यता प्राप्त कुनै चिकित्सकबाट निरोगिताको प्रमाणपत्र सम्बन्धित निकायमा पेस गर्नुपर्नेछ ।

(१) यस नियमको प्रयोजनकालागि विश्वविद्यालय वा नेपाल सरकार स्वास्थ्य सेवा अन्तर्गतका मान्यता प्राप्त चिकित्सकहरूबाट जारी भएको निरोगिताको प्रमाणपत्रलाई मान्यता दिइनेछ ।

१०६. काम गर्ने समय : (१) शिक्षक वा कर्मचारीहरूले विश्वविद्यालयको निकायमा काम वा सेवा गर्नुपर्ने समय सम्बन्धित निकाय प्रमुखले तोकेबमोजिम हुनेछ ।

(२) उपनियम (१) मा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि आवश्यकता परेको अवस्थामा कुनै पनि शिक्षक कर्मचारीले सो तोकिएको समयभन्दा बढी काम वा सेवा गर्नुपर्नेछ ।

(३) उपनियम (१) र (२) बमोजिम विश्वविद्यालयको निकायहरूमा काम वा सेवा गर्दा तोकिएको समयभन्दा बढी काम वा सेवा गर्नुपरेमा कार्यकारी परिषद्ले समय समयमा तोकेबमोजिम अतिरिक्त पारिश्रमिक दिनेछ ।

(४) अख्तियारवालाको स्वीकृति लिई अतिरिक्त काम वा सेवा गराएको भएमा मात्र अतिरिक्त पारिश्रमिक दिइनेछ ।

(५) काठमाडौं उपत्यकाभित्रका लागि प्रत्येक आर्थिक वर्षमा नेपाल सरकारले तोकेबमोजिमको स्थानीय विदा हुनेछ ।

(६) उपत्यका बाहिरका निकायको हकमा स्थानीय रूपमा विचार गरी बढीमा ४ दिनको स्थानीय विदा दिने अधिकार विश्वविद्यालयका सम्बन्धित निकाय प्रमुखलाई हुनेछ ।

(७) नेपाल सरकारले विशेष अवसरमा दिएको सार्वजनिक विदा यस विश्वविद्यालयमा पनि लागु हुनेछ ।

१०७. सेवा विवरण : (१) केन्द्रीय कार्यालयमा विश्वविद्यालयका पदाधिकारी, शिक्षक तथा कर्मचारीहरूको सेवासम्बन्धी विवरणको दर्ता किताब राखिनेछ ।

(२) सेवा विवरण दर्ता किताबमा शिक्षक वा कर्मचारीको उमेर, प्रवेशिका परीक्षा (एसएलसी) को प्रमाणपत्र, नागरिकताको प्रमाणपत्र र अन्य शैक्षिक प्रमाणपत्रहरू जन्मदर्ता र जन्ममिति प्रमाणपत्रअनुसार उक्त सेवाअनुसार विवरण भरिनेछ ।

(३) उपनियम (२) बमोजिम कुनै प्रमाणपत्र नभएमा उपकुलपतिबाट तोकेको समिति वा पदाधिकारीबाट उमेरको निर्णय मानिनेछ ।

(४) उमेरसम्बन्धी कुनै प्रश्न उठेमा विश्वविद्यालय सेवा विवरण दर्तामा चढाएको उमेर अन्तिम र आधिकारिक मानिने छ र विश्वविद्यालय सेवाबाट अनिवार्य अवकाशका लागि सोही सेवा दर्तामा चढाएको उमेर आधिकारिक मानिनेछ ।

(५) विश्वविद्यालय सेवा पुस्तिकामा प्रत्येक शिक्षक तथा कर्मचारीको सेवा तथा आचरणसम्बन्धी हरेक वर्ष प्राप्त हुने विवरण वा प्रतिवेदनको सारांश लेखी अभिलेखीकरण गरिनेछ ।

- (६) शिक्षकहरूले विश्वविद्यालयमा पेस गरेका, वर्षभरिमा प्रकाशित गरेका पाठ्यपुस्तक वा अनुसन्धानात्मक कृतिहरूको सूचीसमेत उक्त अभिलेखमा समावेश गर्नुपर्नेछ ।

१०८. बुझबुझारथ : (१) शिक्षक वा कर्मचारीले विश्वविद्यालय सेवा छाड्दा अख्तियारवाला तोकेको शिक्षक वा कर्मचारी वा व्यक्तिलाई निजले विश्वविद्यालय सेवा छोडेको ३५ दिनभित्र यस विश्वविद्यालयको आर्थिक प्रशासन नियमावली २०६९ बमोजिम बुझबुझारथ गर्नुपर्नेछ ।

- (२) उपनियम (१) बमोजिम बुझबुझारथ नगरेसम्म सञ्चयकोषमा रहेको रकमबाहेक विश्वविद्यालयबाट पाउने रकम रोक्का गरिनेछ ।
- (३) उपनियम (१) बमोजिम बुझबुझारथ नगरेको खण्डमा निजसँग बाँकी रहेको बक्यौता उपनियम (२) मा लेखिएबमोजिम रोक्का रहेको रकमसमेतबाट अख्तियारवालाले असुलउपर गर्नेछ ।
- (४) विश्वविद्यालयअन्तर्गत एक निकायबाट वा अर्को निकाय वा कार्यालयमा सरुवा हुने शिक्षक कर्मचारीले यस नियममा उल्लेख भएबमोजिम बुझबुझारथ गर्नुपर्नेछ ।
- (५) उपनियम (४) बमोजिम म्यादभित्र बुझबुझारथ नगरेमा यस्ता शिक्षक, कर्मचारीको तलब रोक्का गरिनेछ ।

१०९. राजीनामासम्बन्धी व्यवस्था : (१) शिक्षक, कर्मचारीले स्वेच्छाले आफ्नो पदबाट राजीनामा दिन चाहेमा आफू कार्यरत कार्यालयमा लिखित रूपमा राजीनामा पेस गर्नुपर्नेछ ।

- (२) उपनियम (१) बमोजिम आफ्नो कार्यालयमा पेस हुन आएको राजीनामामा सम्बन्धित शिक्षक कर्मचारीलाई राजीनामा स्वीकृत गर्ने अधिकारीको अगाडि सनाखत गराउनुपर्नेछ ।
- (३) नेपाल बाहिर रहेका शिक्षक, कर्मचारीले राजीनामा सनाखत गराउनुपर्दा नेपाली राजदूतावाससमक्ष र नेपाली राजदूतावास नभएको मुलुकमा रहेको भएमा सम्बन्धित मुलुकको नोटरी पब्लिकसमक्ष सनाखत गराई पठाउन सक्नेछ ।

११०. समायोजन : (१) विश्वविद्यालय ऐनको दफा ३ (२) बमोजिम समायोजन भइआउने सम्पूर्ण स्थायी शिक्षक, कर्मचारीहरूलाई समायोजन भएको मितिबाट निजहरूले खाइपाइआएको प्रचलित ग्रेडमा दुई ग्रेड थप गरिनेछ ।

- (२) उपनियम (१) बमोजिमको समायोजनसम्बन्धी अन्य व्यवस्था कार्यकारी परिषद्ले तोकेबमोजिम हुनेछ ।

११०क. समायोजनसम्बन्धी विशेष व्यवस्था : (१) नेपाल सरकार मन्त्री परिषद्को मिति २०७४/०६/०२ को निर्णयबाट सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालयका १५ वटा आङ्गिक क्याम्पसका लागि स्वीकृत शिक्षक, कर्मचारीको दरबन्दी समायोजन गरी स्थायी पदपूर्ति गर्दा सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय ऐन २०६७, को दफा २० को उपदफा (६) बमोजिम उक्त क्याम्पसमा गरेको स्थायी सेवा अवधि विश्वविद्यालय सेवामा गणना गरिने व्यवस्था भएकाले सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय सभाबाट आङ्गिक क्याम्पसका रूपमा आवद्ध गर्ने निर्णय भएको मितिसम्म उक्त क्याम्पसहरूमा स्थायी नियुक्ति प्राप्त शिक्षक, कर्मचारीहरूलाई सभाको उक्त निर्णय भएको समयमा कार्यरत रहेको पदमा नै सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय कार्यकारी परिषद्ले निजको स्थायी सेवा अवधि गणना हुने गरी समायोजन गरी

* शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली (पाँचौ संशोधन) २०७४ द्वारा संशोधित

सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय सेवाको स्वीकृत स्थायी दरबन्दीमा समायोजन नियुक्ति गरी स्थायी पदपूर्ति गर्नेछ ।

- (२) सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय सभाबाट आङ्गिक क्याम्पसका रूपमा आबद्ध गर्ने निर्णय भएको मितिदेखि हालसम्म अटुट रूपमा अस्थायी वा पूर्णकालीन करारमा कार्यरत शिक्षक, कर्मचारीको स्वीकृत दरबन्दीमा समायोजन गर्दा निज शिक्षक, कर्मचारीहरूलाई सभाको उक्त निर्णय भएको समयमा कार्यरत रहेको पदमा नै सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय कार्यकारी परिषद्ले अस्थायी वा पूर्णकालीन करारमा समायोजन नियुक्ति गर्न सक्नेछ ।
- (३) उपनियम (२) बमोजिम अस्थायी वा पूर्णकालीन करारमा समायोजन नियुक्ति भएका शिक्षक, कर्मचारीहरूको स्वीकृत दरबन्दीमा स्थायी पदपूर्ति गर्दा सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय सेवा आयोगबाट एकपटकका लागि मात्र उनीहरूबिच मात्र विशेष आन्तरिक खुला प्रतियोगिता गराई स्थायी पदपूर्ति गरिनेछ ।
- (४) उपनियम (३) बमोजिम समायोजन गरी पदपूर्ति गरिने शिक्षक, कर्मचारीहरूलाई विश्वविद्यालयको स्थायी सेवामा नियुक्ति गर्दा उमेरको हद लाग्ने छैन ।
- (५) उपनियम (१) बमोजिम सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय सेवामा स्थायी पदपूर्ति गर्ने अन्य कार्यविधि सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय कार्यकारी परिषद्ले निर्धारण गरेबमोजिम हुनेछ ।
- (६) उपनियम (१) र (३) बमोजिम सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय सेवामा स्थायी पदपूर्ति भई नियुक्त हुने शिक्षक, कर्मचारीको उपदान तथा निवृत्तिभरण सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालयमा समायोजन भई स्थायी नियुक्ति पाएको मितिबाट गणना हुने गरी योगदानमा आधारित उपदान र निवृत्तिभरण प्रदान गरिनेछ ।
- (७) सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय सेवामा उपनियम (१) र (३) बमोजिम समायोजन भई स्थायी नियुक्ति भएका शिक्षक, कर्मचारीहरूको साविकको क्याम्पसबाट लिनुपर्ने उपदान, निवृत्तिभरण, बिदाहरू तथा औषधोपचार खर्च सम्बन्धित क्याम्पसबाटै फरफारक गरिआउनुपर्नेछ । सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालयमा समायोजन भई स्थायी नियुक्ति पाएको मितिदेखि लागु हुने गरी मात्र निवृत्तिभरण, सञ्चयकोष, उपदान, बिदा र औषधोपचार लगायतका सुविधाहरूको अवधि गणना गरी प्रदान गरिनेछ ।


♦११०(ख) समायोजनबारे थप विशेष व्यवस्था : (१) नेपाल सरकार मन्त्री परिषद्को मिति २०७४/०६/०२ गतेको निर्णयबमोजिम सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालयका आङ्गिक क्याम्पसको रूपमा आबद्ध गरिएका १५ क्याम्पसहरूमध्ये आबद्ध हुन बाँकी क्याम्पस र सोही निर्णयबमोजिम समायोजन गरिएका क्याम्पसहरूमा कार्यरत शिक्षक, कर्मचारीमध्ये नियम ११० क. बमोजिम समायोजन नियुक्ति नपाएका स्थायी शिक्षक, कर्मचारीहरूको हकमा आङ्गिक क्याम्पसहरूले आवश्यकता र औचित्यका आधारमा तोकिएको प्रक्रिया पूरा गरी नियुक्त गरेका शिक्षक कर्मचारीहरूलाई नेपाल सरकार मन्त्री परिषद्द्वारा स्वीकृत दरबन्दी सङ्ख्याको परिधिभित्र रही सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय र क्याम्पस

♦ शिक्षक, कर्मचारी सेवा नियमावली (छैटौँ संशोधन) २०७७ द्वारा थप

सञ्चालक समितिबिच द्विपक्षीय सम्झौता भएका समयमा जो जुन पदमा कार्यरत छन् सोही पदमा कार्यकारी परिषद्द्वारा तोकिएको मापदण्डअनुसार सेवा आयोगको सिफारिसमा स्थायी नियुक्ति गरिनेछ । स्थायी पदपूर्ति नहुन्जेलक्क्सम्म संशोधित नियम सभाबाट पारित भएको मितिदेखि लागु हुने गरी सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय ऐन, २०६७ को दफा २०(१) तथा २०(४) बमोजिम क्याम्पसमा कार्यरत शिक्षक तथा कर्मचारीहरू विश्वविद्यालयको आङ्गिक क्याम्पसको शिक्षक तथा कर्मचारीहरूको रूपमा कार्यरत मानिनेछ ।

- (२) उपनियम (१) बमोजिमको अवधिसम्म अस्थायी, पूर्णकालीन करार नियुक्त गरेका शिक्षक, कर्मचारीहरूलाई स्वीकृत दरबन्दी सङ्ख्याभित्र स्थायी पदपूर्ति गर्दा सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय सेवा आयोगबाट एक पटकको लागि मात्र उनीहरूबिच विशेष आन्तरिक प्रतिस्पर्धा गराई स्थायी पदपूर्ति गरिनेछ ।
- (३) उपनियम (१) र (२) बमोजिम पदपूर्ति गरिने शिक्षक, कर्मचारीहरूलाई विश्वविद्यालयको स्थायी सेवामा नियुक्ति गर्दा उमेरको हद लाग्ने छैन ।
- (४) उपनियम (१) र (२) बमोजिम सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय सेवामा स्थायी पदपूर्ति भई नियुक्त हुने शिक्षक, कर्मचारीको उपदान तथा निवृत्तिभरण सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालयमा नियुक्त भई स्थायी नियुक्ति पाएको मितिबाट गणना हुने गरी योगदानमा आधारित उपदान तथा निवृत्तिभरण प्रदान गरिनेछ ।
- (५) सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय सेवामा उपनियम (१) र (२) बमोजिम नियुक्ति भएका शिक्षक, कर्मचारीहरूको साविकको क्याम्पसबाट लिनुपर्ने उपदान, निवृत्तिभरण, विदाहरू तथा औषधोपचार खर्च सम्बन्धित क्याम्पसबाटै फरफारक गरिआउनुपर्नेछ । सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालयमा स्थायी नियुक्ति पाएको मितिदेखि लागु हुने गरी मात्र निवृत्तिभरण, सञ्चयकोष, उपदान, विदा र औषधोपचार लगायतका सुविधाहरूको अवधि गणना गरी प्रदान गरिनेछ ।

(स्पष्टीकरण: क्याम्पसहरूमा कार्यरत शिक्षक कर्मचारीहरूमध्ये नियम ११०क. बमोजिम समायोजन हुँदाका अवस्थामा २०७० र २०७१ को सभाको निर्णयलाई स्वीकार गरी यस विश्वविद्यालयमा यसपूर्व समायोजन नियुक्ति पाएका शिक्षक तथा कर्मचारीहरूको हकमा पदीय हैसियत फरक परेको अवस्थामा मर्का पर्ने शिक्षक कर्मचारीहरूलाई संशोधित ११०ख.(१) ले आबद्ध हुन बाधा पुऱ्याएको मानिने छैन, तर यसपूर्व समायोजन नियुक्ति लिई सोहीबमोजिम विश्वविद्यालयबाट सेवा सुविधा लिएका शिक्षक कर्मचारीलाई यस नियमबमोजिम नियुक्ति लिएको मितिबाट मात्र नियुक्त पदको सेवा सुविधा उपलब्ध गराइनेछ ।)

 **१११. कार्यव्यवस्थापन प्रणाली :** यस नियमको उद्देश्य पूरा गर्नको लागि यस नियमको अधीनमा रही कार्यकारी परिषद्ले विनियम, निर्देशिका, कार्यविधि, कार्यव्यवस्थापन प्रणाली बनाई लागु गर्न सक्नेछ ।